Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 6
अंक- 27

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 ज़विल कअदह 1442 हिज्री कमरी 8 वफा 1400 हिज्री शम्सी 8 जुलाई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

मृत की प्रशंसा करना

(1367) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि लोग एक जनाज़े के पास से गुज़रे और उन्होंने उसकी अच्छी प्रशंसा की तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अनिवार्य हो गई। फिर एक और जनाज़े के पास से गुज़रे। उन्होंने उस की निंदा की। (नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : अनिवार्य हो गई। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : क्या चीज़ अनिवार्य हो गई? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जिसकी तुमने अच्छी प्रशंसा की, उसके लिए जन्नत अनिवार्य हो गई और जिसकी तुमने निंदा की है, उसके लिए आग अनिवार्य हो गई। तुम ज़मीन में अल्लाह तआला के गवाह हो।

(1368) अबुल असवद से रिवायत है कि मैं मदीना में आया और वहां रोग फैला हुआ था। मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा था। उनके पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो उस जनाज़े वाले की अच्छी प्रशंसा की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अनिवार्य हो गई। एक और जनाज़ा गुज़रा उसकी भी अच्छी प्रशंसा की गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : अनिवार्य हो गई। एक तीसरा जनाज़ा गुज़रा। उसकी की निंदा हुई। (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा अनिवार्य हो गई। अबुल असवद कहते थे : मैंने कहा : हे अमीरुल मोमनीन! क्या चीज़ अनिवार्य हो गई? कहने लगे : मैं ने वही कहा है जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा था। जिस मुस्लमान की भी चार मुस्लमान अच्छी गवाही दे दें अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। हमने कहा : यदि तीन गवाही दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तीन भी। हमने कहा : यदि दो गवाही दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : दो भी। फिर हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से एक की गवाही के बारे मैं नहीं पूछा।

(सही बुख़ारी भाग 2 किताबुल जनायज़,)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने वह सच्चाई तथा वफ़ादारी का नमूना दिखाया,जिसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में नहीं मिल सकता। मैं अब देखता हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी जमाअत को भी इस की क़दर और सामर्थ्य के अनुसार एक जोश प्रदान किया है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

एक श्रद्धालु और वफ़ादार जमाअत

और मैं ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करता हूँ कि उसने मुझे एक श्रद्धालु और वफ़ादार जमाअत प्रदान की है। मैं देखता हूँ कि जिस काम और उद्देश्य के लिए मैं उनको बुलाता हूँ बहुत तेज़ी और जोश के साथ एक दूसरे से पहले अपनी हिम्मत और सामर्थ्य के अनुसार आगे बढ़ता है और मैं देखता हूँ कि उनमें एक सच्चाई और श्रद्धा पाई जाती है मेरी तरफ़ से किसी बात का इशारा होता है और वे अनुकरण के लिए तय्यार। वास्तव में कोई क़ौम और जमाअत तैयार नहीं हो सकती। जब तक कि उस में अपने इमाम की इताअत और अनुकरण के लिए इस किस्म का जोश और इख़लास और वफ़ा न हो। हज़रत मसीह अलै-हिस्सलाम को जो मुश्किलें और मसीबतें उठानी पड़ीम। उनकी बीमारियों और कारणों में से जमाअत की कमज़ोरी और बेदिली भी थी; अत: जब उनको गिरफतार किया गया ,तो पतरस जैसे बड़े हवारी ने अपने आक़ा और मुर्शिद के सामने इन्कार कर दिया और न केवल इन्कार किया,बल्कि तीन बार लअनत भी भेज दी। और अधिकतर उनको छोड़कर भाग गए। इसके विरुद्ध आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने वह सच्चाई तथा वफ़ादारी का नमूना दिखाया,जिसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में नहीं मिल सकता,उन्होंने आपके लिए हर तरह का दुख उठाना आसान समझा। यहां तक कि प्रिय वतन छोड़ दिया अपनी धन सम्पत्ति और लोगों से अलग हो गए और अन्त में आप के लिए जान तक देने से शंका और अफ़सोस नहीं किया। यही सच्चाई और वफ़ा थी जिसने उनको अन्त में उन को सफल कर दिया। इसी तरह मैं अब देखता हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी जमाअत को भी इस की क़दर और सामर्थ्य के अनुसार एक जोश प्रदान किया है और वह वफ़ादारी और सच्चाई का नमूना दिखाते हैं। जिस दिन से मैंने नसीबैन की तरफ़ एक जमाअत के भेजने का इरादा किया है। हर एक व्यक्ति कोशिश करता है कि इस सेवा के लिए मैं निर्धारित किया जाऊं और दूसरे को रश्क की निगाह से देखता है और इच्छा करता है कि इस के स्थान पर यदि मुझे भेजा जाए तो मेरी बड़ी ही ख़ुश-क़िस्मती है। बहुत से लोगों ने इस सफ़र पर जाने के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया , मैं ने इन दरख़ास्तों से पहले मिर्ज़ा ख़ुदा-बख़्श साहिब को इस सफ़र के लिए चुन लिया था और मौलवी क़ुतुबुद्दीन और मियां जमालु-द्दीन को उनके साथ जाने के लिए तजवीज़ कर लिया था। इस लिए मुझे उन दोस्तों के निवेदनों को वापस कर देना पड़ा। परन्तु मैं जानता हूँ कि वे लोग जिन्होंने कामिल और सच्चे इख़लास के साथ अपने आपको इस सेवा के लिए प्रस्तुत किया है। अल्लाह तआला उनकी पवित्र नीय्यतों के सवाब को नष्ट नहीं करेगा और वे अपने इख़लास के अनुसार बदला पाएँगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008)

भविष्य में हिंदुस्तान की भाषा उर्दू होगी और दूसरी कोई भाषा इसके समक्ष नहीं ठहर सकेगी

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः इब्राहीम आयत 5 وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِہٖ لِیُبَیِّنَ لَہُمۡ فَیُضِلُّ اللّٰہُ مَنۡ یَّشَآءُ وَیَہۡدِیۡ مَنۡ یَّشَآءُ وَہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ। की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

اِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِہٖ के अर्थ कुछ ने तो ये किए हैं कि रसूल की वह्यी केवल उसकी क़ौम की भाषा में होनी चाहीए। लेकिन यह सही नहीं। हाँ यह सही है कि उसकी क़ौम की भाषा में ज़रूर वह्यी होनी चाहीए क्योंकि वे संदेश जो उसने अपनी क़ौम को पहुंचाना है यदि दूसरी भाषा में हुआ तो उस की तब्लीग़ उसके लिए मुश्किल हो जाएगी। लेकिन बतौर निशान और चमत्कार किसी और भाषा में इल्हाम हो तो इस में कोई हर्ज नहीं।

कुछ लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हामों पर यह आयत पेश करके आरोप लगाते हैं। हालाँकि अरबी और उर्दू के अतिरिक्त आपको जिन भाषाओं में इल्हाम हुए वे निशान के रूप में और चमत्कार के रूप में हैं। अरबी में आपको इस लिए इल्हाम हुए कि वे इस्लाम की धार्मिक भाषा है। और इस तरह मुस्लमानों की

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-19)

विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों से मुलाक़ातों का प्रोग्राम , तुर्क दल की मुलाक़ात,सलोवीयन दल की मुलाक़ात, अरब लोगों की मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों से मुलाक़ातों का प्रोग्राम

आज प्रोग्राम के अनुसार तुर्क क़ौम से सम्बन्ध रखने वाले लोगों पर आधारित दल और स्लोवेनिया से आने वाले दल और अरब लोगों से मुलाक़ातों का प्रोग्राम था। आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ पधारे और मुलाक़ातों का यह सिलसिला शुरू हुआ।

तुर्क दल की मुलाक़ात

सबसे पहले तुर्क क़ौम से सम्बन्ध रखने वाले लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस वर्ष 46 पुरुष और महिलाओं पर आधारित तुर्क दल जलसे में शामिल हुआ।

मुलाक़ात के शुरू में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सबसे पहले अनुकंपा करते हुए दल के समस्त सदस्यों का हाल मालूम फ़रमाया। प्रत्येक ने इस पर बेहद ख़ुशी का प्रकटन किया कि आज हमारी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो रही है। दल के सदस्यों ने जलसे के डिसिप्लिन, अनुशासन और आपसी इत्तिहाद और भाई चारे की बहुत प्रशंसा की।

एक अहमदी मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को संबोधित करते हुए अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे आपसे मुहब्बत है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "मुझे भी आपसे मुहब्बत है।"

एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मुस्लमानों में बहुत से फ़िरक़े हो जाएंगे फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माना में मसीह ओ- महदी आएगा। समस्त मुस्लमान इस मसीह और महदी के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु हम अर्थात जमाअत अहमदिया ईमान रखती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आने वाला मसीह और महदी आ चुका है और हमने उसको स्वीकार किया है और उस पर ईमान ले आएं हैं ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सब धर्मों को एक हाथ पर जमा करने के लिए आए थे। एक उम्मत बनाने के लिए आए थे। आप अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला शुरू हुआ और आपके मानने वालों की संख्याा निरन्तर बढ़ती रही और आज भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से प्रत्येक वर्ष लाखों मुस्लमान जमाअत अहमदिया में शामिल होते हैं और हमारी संख्या निरन्तर बढ़ है।

एक तुर्क अहमदी मित्र ने कहा कि हम सब तुर्क अहमदी आपसे मुहब्बत रखते हैं। दस पंद्रह वर्ष पूर्व केवल तीन चार तुर्क अहमदी नज़र आते थे। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हम अहमदियों का एक बड़ा ग्रुप है दुआ करें कि तुर्की में भी जमाअत जल्द बढ़े।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। अब यह काम तो आप लोगों ने करना है।"

एक नौजवान विद्यार्थी ने अर्ज़ क्या कि मेरी परीक्षा में मेरी सफ़लता के लिए दुआ करें :

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ख़ुदा सफ़ल करे। ख़ुदा आपको सफ़लता देगा

इसी तरह एक व्यक्ति ने अपनी माता की बीमारी का वर्णन करके दुआ का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए"

एक साहिब ने प्रश्न किया कि हमने जलसे के मध्य हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की व्यस्तता देखी है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ किस तरह इतना बोझ उठाते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जब ख़ुदा तआला ने ज़िम्मेदारी डाली है तो वह सहायता भी करता है। दुआ करें कि ख़ुदा अपनी सहायता का हाथ बढ़ाता चला जाए। आप को यह दुआ करनी चाहिए।

एक नौ-मुबाईन ने कहा कि मैं ख़ुदा के फ़ज़ल से छः माह पूर्व अहमदी हुआ हूँ। इस समय हुज़ूर को देख कर मेरी कैफ़ीयत बहुत भावुक है। संसार में कई मिलियन अहमदी इस बात को तरसते हैं कि हमें ख़लीफतुल मसीह स्वप्न में ही नज़र आ जाऐं परन्तु हम कितने ख़ुशनसीब हैं कि हुज़ूर अनवर के सामने बैठे हैं। उन्हों ने कहा कि मेरे तीन भांजे अहमदी नहीं हैं। ये मेरे साथ आए हैं उनके लिए दुआ करें कि ख़ुदा उनको अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ दे और सारी फ़ैमिली अहमदियत स्वीकार ले।

एक मित्र ने प्रश्न किया कि हमारे और ग़ैर अहमदियों के मध्य बहुत सी समान चीज़ें हैं परन्तु हमारे विरोधी मतभेद की बातों को बहुत हवा देते हैं। इस अंतर को किस तरह कम किया जा सकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह बताना चाहिए कि हमारे मध्य जो मुश्तर्क चीज़ें हैं उन पर आओ और इकट्ठे हो जाओ। ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में यही उसूल बताया है। تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ कि एक कलमे की ओर आ जाओ जो तुम्हारे और हमारे मध्य है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अहले किताब वालों से यह उसूल चल सकता है तो मुस्लमानों के साथ क्यों नहीं चल सकता? आजकल इन्सानियत की आवश्यकता है। इन्सानी इक़दार क़ायम करने की आवश्यकता है। सबको इस पर इकट्ठा होना चाहिए। ख़ुदा तआला के ज़्यादा अहकामात इन्सानी क़दरों के क़ियाम के हैं। धर्म तो बाद की बात है। आपका काम दूसरों को समझाना है। बाक़ी जिन्होंने विरोध करनी है वे करते चले जाऐंगे।

एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : पाकिस्तान में मुल्लाओं की ओर से विरोध हो रहा है। वे बात सुनना नहीं चाहते। परन्तु अफ़्रीक़ा में उल्मा बात सुनते हैं और जब वास्तव में समझ आ जाए तो मानते हैं और अपने अनुयाइयों के साथ अहमदियत स्वीकार कर लेते हैं। जिसको ख़ुदा ने हिदायत देनी हो हिदायत देता है और जिन पर मोहरें लगा दी हैं उनको हिदायत किस तरह मिल सकती है?

मलाक़ात के बाद तुर्क लोगों ने अपने विचारों का प्रकटन भी किया। एक दोस्त Hassan Odabasi साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए बताया कि : हुज़ूर जब पधारे तो मैंने देखा कि कमरा नूर से मुनव्वर हो गया है और इससे हमारे दिलों पर संतुष्टि नाज़िल हुई। आपने दिली मुहब्बत से हमें स्वीकार फ़रमाया और हमारे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया। हमें आपकी स्वीकृत दुआओं से हिस्सा मिला। आपने हम सब के लिए और तुर्की जमाअत की तरक़्क़ी के लिए भी दुआ की।

एक दोस्त Karim Mahmud साहिब ने वर्णन किया कि : मुझे जीवन में पहली बार इतने क़रीब से प्यारे आक़ा को देखने का अवसर मिला है। इस मुलाक़ात के प्रत्येक लम्हे ने मेरे अंदर ही उत्साह को जन्म दिया। हुज़ूर ने प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव के अनुसार उस के प्रश्न का जिस तरह उत्तर दिया उसका अपना ही एक आनंद था।

इस दल में एक 12 वर्ष का ग़ैर मुस्लिम बच्चा भी शामिल था। उसने अपनी भावनाओ का प्रकटन करते

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मुझ पर इस समय एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे दुनिया की समस्त वस्तुओं से अधिक प्रिय है

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सूरः फ़तह की आयात तिलावत फ़रमाई, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या यह सुलह वाक़ई इस्लाम की विजय है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ निसंदेह यह हमारी विजय है

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा ेराशिद फ़ारूक़-ए-आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

सुलह हुदैबिया के अवसर पर मुस्लमानों और मक्का के क़ुरैश के मध्य जो मुआहिदा हुआ उस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के भी हस्ताक्षर थे

बनू मुस्तलक़ के युद्ध के दिन नमाज़ों के क़ज़ा होने की विषय में रिवायत पर चर्चा

पाँच मरहूमीन आदरणीय मलिक मुहम्मद यूसुफ़ सलीम साहिब साबिक़ इंचार्ज विभाग आशुलिपि रब्वाह, आदरणीय शुऐब अहमद साहिब वाकिफ-ए-ज़िंदगी क़ादियान, आदरणीय मक़्सूद अहमद साहिब भट्टी मुबल्लिग़ सिलसिला क़ादियान, आदरणीय जावेद इक़बाल साहिब फ़ैसलाबाद और आदरणीया मदीहा नवाज़ साहिबा पत्नी नवाज़ अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला घाना का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 जून 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबात में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन हो रहा था और युद्धत और सिराया का वर्णन था। ह्मराउल असद के युद्ध के बारे में आता है कि ओहद के युद्ध के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस मदीना तशरीफ़ ले आए और कुफ़्फ़ार ने मक्का की राह ली परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ुरैश के पुनः लश्कर के आक्रमण की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो के साथ ह्मराउल असद के स्थान तक तशरीफ़ ले गए। ह्मराउल असद मदीना से आठ मील की दूरी पर एक स्थान है।

इस युद्ध के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो तहरीर फ़रमाया है वह इस प्रकार है, कुछ भाग वर्णन करता हूँ कि बज़ाहिर लश्कर-ए-क़ुरैश ने मक्का की राह ले ली थी। यह अनुमान था कि उनका यह कार्य मुस्लमानों को ग़ाफ़िल करने की नीयत से न हो और ऐसा न हो कि वे अचानक लौट कर मदीना पर आक्रमण कर दें। इस लिए उस रात को मदीना में पहरे की व्यवस्था की गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मकान पर विशेषता पूरी रात सहाबा ने पहरा दिया। सुबह हुई तो मालूम हुआ कि यह अनुमान केवल ख़्याली नहीं था क्योंकि फ़ज्र की नमाज़ से पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना पहुंची कि क़ुरैश का लश्कर मदीना से कुछ मील जाकर ठहर गया है और क़ुरैश के सरदारों में यह सरगर्म बेहस जारी है कि इस फ़तह से फ़ायदा उठाते हुए क्यों न मदीना पर हमला कर दिया जाए और कुछ क़ुरैश एक दूसरे को ताना दे रहे हैं कि न तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को क़तल किया और न मुस्लमान औरतों को ग़ुलाम बनाया और न उनकी चीज़ों पर क़ाबज़ा किया बल्कि जब तुम ने उन पर विजय प्राप्त की और तुम्हें यह अवसर मिला कि तुम उनको ध्वस्त कर देते तो तुम उन्हें यूंही छोड़ कर वापस चले आए ताकि वे फिर ज़ोर पकड़ लें। अतः अब भी अवसर है वापस चलो और मदीना पर हमला करके मुस्लमानों की जड़ काट दो। एक गिरोह यह कहता था कि जो कुछ हो गया है उसे लाभान्वित समझो और मक्का वापस लौट चलो। ऐसा न हो कि यह प्रसिद्धि जो थोड़ी सी जंग के जीतने से हासिल हुई है यह भी गवा बैठो और यह विजय पराजय की सूरत में बदल जाए लेकिन अंततः जोशीले लोगों की राय ग़ालिब आई और क़ुरैश मदीना की तरफ़ लौटने के लिए तैयार हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब इन वाक़ियात की सूचना हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत ऐलान फ़रमाया कि मुस्लमान तैयार हो जाएं परन्तु साथ ही यह आदेश भी दिया कि अतिरिक्त उन लोगों के जो ओहद में शरीक हुए थे और कोई हमारे साथ न निकले।

(मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 346 ह्मराउल असद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 504-505)

यह भी एक जगह रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब क़ुरैश के इस मश्वरा की सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उन्हें मामले से अवगत फ़रमाया। दोनों ने मश्वरा दिया कि दुश्मन का पीछा करने जाना चाहिए।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल वकादी भाग 1 पृष्ठ 278, ग़ज़वा ओहद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2013 ई.)

"इस लिए ओहद के सिपाही जिन में से अधिकतर घायल थे अपने घावों को बांध कर अपने आक़ा के साथ हो लिए और लिखा है कि इस अवसर पर मुस्लमान ऐसी ख़ुशी और जोश के साथ निकले कि जैसे कोई विजय लश्कर विजय प्राप्त करने के बाद दुश्मन का पीछा करने निकलता है। आठ मील की दूरी तै करके आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ह्मराउल असद पहुंचे ... अब चूँकि शाम हो चुकी थी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यहीं डेरा डालने का आदेश दिया और फ़रमाया कि मैदान में अलग-अलग स्थानों पर आग रोशन कर दी जाए। इस लिए देखते ही देखते ह्मराउल असद के मैदान में पाँच सौ आगे जलनी शुरू हो गईं जो हर दूर से देखने वाले के दिल को भयभीत करती थीं। शायद इसी अवसर पर क़बीला ख़ुज़ाआ का एक मुशरिक सरदार मअबद नाम का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ओहद पर शहीद होने वालों के विषय में हमदर्दी का इज़हार किया और फिर अपने रास्ता पर रवाना हो गया। दूसरे दिन जब वह स्थान रौहा में पहुंचा तो क्या देखता है कि क़ुरैश का लश्कर वहां डेरा डाले पड़ा है और मदीना की तरफ़ वापस चलने की तैयारियाँ हो रही हैं। मअबद तुरंत अबूसुफ़यान के पास गया और उसे जा कर कहने लगा कि तुम क्या करने लगे हो? ख़ुदा की कसम! मैं तो अभी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के लश्कर को ह्मराउल असद में छोड़ कर आया हूँ और ऐसा डराने वाला लश्कर मैंने कभी नहीं देखा और ओहद की हार की निंदा ने उनको इतना जोश दिलाया है कि तुम्हें देखते ही भस्म कर जाऐंगे। अबू सुफ़यान और उसके साथियों पर मअबद की इन बातों से ऐसा भय हुआ कि वे मदीना की ओर लौटने का इरादा छोड़ कर तुरंत मक्का की ओर रवाना हो गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लश्कर क़ुरैश के इस प्रकार भाग निकलने की सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा का शुक्र किया और फ़रमाया कि यह ख़ुदा का भय है जो उसने कुफ़्फ़ार के दिलों पर डाला है। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ह्मराउल असद में दो तीन दिन और कयाम फ़रमाया।''

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 504-505)

बनू मुस्तलक़ का युद्ध। बनू मुस्तलक़ का युद्ध शाबान पाँच हिज्री में हुआ। उसे मुरयसी का युद्ध भी कहते हैं। इस का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार लिखा है कि "क़ुरैश की मुख़ालिफ़त दिन प्रतिदिन ज़्यादा ख़तरनाक रूप धारणा करती जाती थी। वे अपनी उपद्रव के कार्यों से अरब के बहुत से क़बायल को इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध खड़ा कर चुके थे लेकिन अब उनकी दुश्मनी ने एक नया भय पैदा कर दिया और वह यहाँ के हिजाज़ के वे क़बायल जो मुस्लमानों के साथ अच्छे सम्बन्ध रखते थे अब वे भी क़ुरैश के उपद्रव के कार्यों से मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उठने शुरू हो गए। इस विषय में पहल करने वाला मशहूर क़बीला बनू ख़ुज़ाह था जिनकी एक शाख़ बनू मुस्तलक ने मदीना के ख़िलाफ़ हमला करने की तैयारी शुरू कर दी और उनके सरदार हारिस बिन अबी ज़िरार ने इस क्षेत्र के दूसरे क़बायल में दौरा करके कुछ और क़बायल को भी अपने साथ मिला लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब इन बातों की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मज़ीद सावधानी के तौर पर अपने एक सहाबी बुरेयदा बिन हुसैयब नामी को हालात मालूम करने के लिए "पता करने के लिए" बनू मुस्तलक़ की तरफ़ रवाना फ़रमाया और उनको ताकीद फ़रमाई कि बहुत जल्द वापस आकर वास्तविकता से आपको सूचित करें। बुरेयदा गए तो देखा कि सच में एक बहुत बड़ा इज्तेमा है और निहायत ज़ोर शोर से मदीना पर हमले की तैयारियाँ हो रही हैं। उन्होंने तुरंत वापस आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचना दी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी आदत के अनुसार मुस्लमानों को पेशक़दमी के तौर पर बनू मुस्तलक़ की सीमा की तरफ़ रवाना होने की तहरीक फ़रमाई और बहुत से सहाबा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ चलने को तैयार हो गए बल्कि एक बड़ा गिरोह मुनाफ़क़ीन का भी जो इससे पहले इतनी संख्या में कभी शामिल नहीं था "वे भी'' साथ हो गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने पीछे अबू ज़र गफ्फारी रज़ियल्लाहु अन्हु या कुछ रिवायत के अनुसार ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का अमीर निर्धारित करके अल्लाह का नाम लेते हुए शाबान 5 हिज्री में मदीना से निकले। फ़ौज में केवल तीस घोड़े थे। जबकि ऊंटों की संख्या किसी क़दर ज़्यादा थी और इन्ही घोड़ों और ऊंटों पर मिल जुल कर मुस्लमान बारी-बारी सवार होते थे। रास्ता में मुस्लमानों को कुफ़्फ़ार का एक जासूस मिल गया जिसे उन्होंने पकड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे तहक़ीक़ के बाद कि वह वास्तव में जासूस है उससे कुफ़्फ़ार के विषय में कुछ हालात इत्यादि पूछने चाहे परन्तु उसने बताने से इंकार किया और चूँकि उस का रवैय्या संदिग्ध था इस लिए प्रचलित जंग के क़ानून के अधीन "क़ानून-ए-जंग जो था उसके अधीन" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको क़तल कर दिया और इसके बाद इस्लाम का लश्कर आगे रवाना हुआ। बनू मुस्तलक को जब मुस्लमानों के आ जाने की सूचना हुई और यह ख़बर भी पहुंची कि उनका जासूस मारा गया है तो वे बहुत भयभीत हुए क्योंकि असल उद्देश्य उनका यह था कि किसी तरह मदीना पर अचानक हमला करने का अवसर मिल जाए परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सचेत होने के कारण से अब उनको लेने के देने पड़ गए थे। अत: वह बहुत भयभीत हो गए और दूसरे क़बायल जो उनकी सहायता के लिए उनके साथ जमा हो गए थे वे तो ख़ुदा की इच्छा के अधीन कुछ ऐसे भयभीत हुए कि तुरंत उनका साथ छोड़ कर अपने-अपने घरों को चले गए परन्तु स्वयं बनू मुस्तलक़ को क़ुरैश ने मुस्लमानों की दुश्मनी का कुछ ऐसा नशा पिला दिया था कि वे फिर भी जंग के इरादे से पीछे नहीं हटे और पूरी तैयारी के साथ इस्लामी लश्कर के मुक़ाबला के लिए अड़े रहे। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मरसीआ में पहुंचे जिसके निकट बनू मुस्तलक़ का क़ियाम था और जो समुंद्र के किनारे मक्का के निकट और मदीना के मध्य एक स्थान का नाम है तो आप "सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम'' ने डेरा डालने का आदेश दिया और सफ़ें तैयार करने और झंडों की तक़सीम इत्यादि के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि आगे बढ़ कर बनू मुस्तलक़ में यह ऐलान करें कि यदि अब भी वे इस्लाम की दुश्मनी से रुक जाएं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत को स्वीकार कर लें तो उनको अमन दिया जाएगा और मुस्लमान वापस लौट जाऐंगे। परन्तु उन्होंने सख़्ती के साथ इंकार किया और जंग के वास्ते तैयार हो गए। यहाँ तक कि लिखा है कि सबसे पहला तीर जो इस जंग में चलाया गया वह उन्ही के आदमी ने चलाया था। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी यह हालत देखी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी सहाबा को लड़ने का आदेश दिया। "जंग उन्होंने दूसरों ने मुख़ालिफ़ीन ने, दुश्मनों ने शुरू कर दी थी।" थोड़ी देर तक फ़रीक़ैन के मध्य ख़ूब तेज़ तीर-अंदाज़ी हुई। जिसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा को एक साथ धावा कर देने का आदेश दिया "एक दम हमला कर दो।'' और इस अचानक हमले के नतीजे में कुफ़्फ़ार के पांव उखड़ गए परन्तु मुस्लमानों ने ऐसी होशियारी के साथ उनका घेरा डाला कि सारी की सारी क़ौम केद हो कर हथियार डालने पर विवश हो गई और केवल दस कुफ़्फ़ार और एक मुस्लमान के क़तल पर इस जंग का जो एक ख़तरनाक रूप हो सकता था अंत हो गया।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखते हैं कि "इस अवसर पर यह वर्णन करना ज़रूरी है कि इसी युद्ध के विषय में सही बुख़ारी में एक रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू मुस्तलक पर ऐसे समय में आक्रमण किया था कि वे ग़फ़लत की हालत में अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे परन्तु ग़ौर से देखा जाए तो यह रिवायत इतिहासकारों की रिवायत के विपरीत नहीं है बल्कि यह वास्तव में दो रिवायतें दो अलग अलग वक़्तों से सम्बन्ध रखती हैं अर्थात घटना इस प्रकार है कि जब इस्लामी लश्कर बनू मुस्तलक़ के निकट पहुंचा तो उस समय चूँकि उनको यह मालूम नहीं था कि मुस्लमान बिल्कुल निकट आ गए हैं (जबकि उन्हें इस्लामी लश्कर के आने की सूचना ज़रूर हो चुकी थी) वे संतोष के साथ एक बे-तरतीबी की हालत में पड़े थे और इसी हालत की तरफ़ बुख़ारी की रिवायत में भी संकेत है लेकिन जब उनको मुस्लमानों के पहुंचने की सूचना हुई तो वे अपनी स्थाई पूर्व की तैयारी के अनुसार तुरंत लाइनों में खड़े हो कर मुक़ाबला के लिए तैयार हो गए और यह वह हालत है जिसका वर्णन इतिहासकारों ने किया है और इस मतभेद की यही व्याख्या अल्लामा इब्ने हिज्र और कुछ दूसरे इतिहासकारों ने की है और यही उचित मालूम होता है।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 557 से 559)

बनू मुस्तलक़ के युद्ध से वापसी पर एक और घटना भी हुई। सही मुस्लिम में इसकी रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ एक युद्ध अर्थात युद्ध बनू मुस्तलक़ में थे कि मुहाजिरों में से किसी आदमी ने अंसार में से किसी आदमी की पीठ पर मारा। अंसारी ने कहा अंसार! और मुहाजिर ने कहा हे मुहाजिरों! अर्थात दोनों ने मदद के लिए अपने-अपने लोगों को बुलाया। अंसार ने भी, मुहाजिरों ने भी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक यह मुआमला पहुंचा और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह शोर सुना तो इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह मूर्खता पूर्ण आवाज़ें कैसी हैं? उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुहाजिरों में से एक आदमी ने अंसार में से एक आदमी की पीठ पर मारा है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इस बात को छोड़ दो। यह गंदी बात है। यह व्यर्थ की बातें न किया करो कि ज़रा-ज़रा सी बात पर लड़ाई झगड़े शुरू कर दो। जब अब्दुल्लाह बिन उबय ने यह सुना, वे भी वहां साथ था तो उसने कहा कि उन्होंने तो ऐसा कर लिया कि एक मुहाजिर ने अंसार की कमर पर मारा, चाहे एक थप्पड़ ही मारा हो, दो हत्थड़ ही मारा हो लेकिन अल्लाह की क़सम! यदि हम मदीना की तरफ़ लौटे तो ज़रूर अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ज़लील तरीन व्यक्ति को वहां से बाहर निकाल देगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे आज्ञा दीजीए कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन काट दूं। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जाने दो। लोग ये बातें न करने लगें कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम अपने साथियों को क़तल करता है।

(सही मुस्लिम किताब البر والصلة باب نصر الاخ ظالما او مظلوما हदीस 6583)

इस घटना की तफ़सील सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में वर्णन हुई है जो मैं छोड़ता हूँ। यह पहले वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल अब्दुल्लाह बिन उबैयी की आख़िरी ज़माने की हालत का वर्णन करते हुए सीरत इब्ने हश्शाम में लिखा है कि इसके बाद अब्दुल्लाह बिन उबैयी जब कोई ऐसी वैसी बात कहता उसी की क़ौम उस को सख़्त सुस्त कहती थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब उस के हालात का इल्म हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जिस दिन तुम ने मुझ से उस के क़तल कराने के वास्ते कहा था, आज्ञा मांगी थी कि मैं क़तल कर दूं यदि मैं उसको क़तल करा देता तो लोग नाक मुँह चढ़ाते और यही लोग जो नाक मुँह चिढ़ाने वाले थे, अब यदि उन्ही लोगों को मैं उस के क़तल का आदेश करूँ तो वे ख़ुद उस को क़तल कर देंगे। देखो सब्र की वजह से और हालात सामने आने की वजह से वही जो उसके समर्थक थे आज उसके ख़िलाफ़ हो गए हैं और ये उसको क़तल भी कर सकते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैं ने जान लिया कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात बरकत के लिहाज़ से मेरी बात से बहुत महान थी।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 672 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 2001ई.)

मुनाफ़ेकीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैयी की नमाज़ जनाज़ा जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पढ़ने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा से मना किया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे इख़तियार दिया गया है कि मैं उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँ या न करूँ। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। फिर जब अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने की पूर्णता मनाही फ़र्मा दी तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ानी बंद कर दी थी।

(अल् इस्तेयाब फ़ी मार्फतुल साहाब भाग 3 पृष्ठ 941 عبد الله بن عبد الله انصاری, दारुल जलील बेरूत)

अबूसलमा ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ंदक़ के युद्ध के दिन सूरज डूबने के बाद आए और कुफ़्फ़ार क़ुरैश को बुरा-भला कहने लगे। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे तो अस्र की नमाज़ भी नहीं मिली यहां तक कि सूरज डूबने लगा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की कसम मैं ने भी नहीं पढ़ी। इस पर हम उठ कर बुतहान की तरफ़ गए। बुतहान भी मदीना की वादीयों में से एक वादी है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के लिए वुज़ू किया और हमने भी वुज़ू किया और सूरज डूबने के बाद अस्र की नमाज़ पढ़ी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसके बाद मग़रिब की नमाज़ पढ़ी। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब مواقيت الصلوٰة باب من صلى بالناس جماعة بعد ذهاب الوقت हदीस 596) (मोअज्जमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 529 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

इस बारे में यह बेहस चलती है कि ख़ंदक़ के युद्ध के दौरान नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो कितनी नमाज़ें नहीं पढ़ सके थे। इस बारे में अलग अलग रिवायत मिलती हैं। इस लिए एक रिवायत यह है कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ंदक़ के दिन उन काफ़िरों को बुरा-भला कहने लगे और कहा मुझे अस्र की नमाज़ नहीं मिली यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया। कहते थे इस पर हम बुतहा में उतर गए और उन्होंने सूरज ग़ुरूब होने के बाद नमाज़ पढ़ी। फिर उन्होंने मग़रिब की नमाज़ पढ़ी। यह भी बुख़ारी में ही रिवायत है। अर्थात पहली में यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी साथ थे।

(सही बुख़ारी किताब مواقيت الصلوٰة باب قضاء الصلوات الاولىٰ فالاولىٰ हदीस 598)

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ंदक़ के अवसर पर फ़रमाया अल्लाह इन काफ़िरों के लिए उनके घर और उनकी क़ब्रें आग से भर दे। उन्होंने हमें व्यस्त रखा और बीच की नमाज़ अर्थात मध्य की नमाज़ का अवसर नहीं दिया यहां तक कि सूरज डूब गया।

(सही बुख़ारी किताब لمغازی باب غزوة الخندق و هی الاحزاب, हदीस 4111)हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत भी बुख़ारी की है।

फिर अबू उबैदा बिन अब्दुल्लाह अपने पिता से यह रिवायत करते हैं कि ख़ंदक़ के दिन मुशरेकीन ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को चार नमाज़ों से रोके रखा यहां तक कि रात का हिस्सा जितना अल्लाह ने चाहा गुज़र गया। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को इरशाद फ़रमाया तो उन्होंने अज़ान दी।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इक़ामत का इरशाद फ़रमाया और ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। फिर इक़ामत का इरशाद फ़रमाया और अस्र की नमाज़ पढ़ाई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इक़ामत का इरशाद फ़रमाया और मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इक़ामत का इरशाद फ़रमाया और इशा की नमाज़ पढ़ाई। यह मस्नद अहमद बिन हम्बल की रिवायत है। (मस्नद हमद बिन हम्बल भाग 2 पृष्ठ 6-7 मस्नद अब्दुल्लाह बिन मसऊद हदीस 3555 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन समस्त रिवायत को कमज़ोर क़रार देते हुए केवल एक रिवायत को सही क़रार दिया है जिसमें अस्र की नमाज़ निर्धारित समय से तंग समय में पढ़ने का वर्णन है। इस लिए ख़ंदक़ की जंग में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चार नमाज़ें क़ज़ा करने पर पादरी फ़तह मसीह के आरोप का उत्तर देते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आपका यह शैतानी वस्वसा कि ख़ंदक़ खोदने के समय चारों नमाज़ें क़ज़ा की गईं अव्वल आप लोगों की इल्मियत तो यह है कि क़ज़ा का शब्द प्रयोग किया है। हे नादान क़ज़ा पढ़ने को कहते हैं। "छोड़ने को नहीं कहते।" "तर्क नमाज़ का नाम क़ज़ा कदापि नहीं होता। यदि किसी की नमाज़ तर्क हो जाए तो उसका नाम फ़ौत है'' अर्थात नमाज़ फ़ौत हो गई।'' इसी लिए हमने पाँच हज़ार रुपय का विज्ञापन दिया था कि ऐसे बेवक़ूफ़ भी इस्लाम पर आरोप करते हैं जिनको अभी तक क़ज़ा के अर्थ भी मालूम नहीं। जो व्यक्ति शब्दों को भी अपने स्थान पर प्रयोग नहीं कर सकता वह नादान कब यह प्रतिभा रखता है कि सूक्ष्म पर v\ विषयों पर नुक्ता-चीनी कर सके। बाक़ी रहा यह कि ख़ंदक़ खोदने के समय चार नमाज़ें जमा की गईं इस बेवकूफ़ाना भ्रम का उत्तर यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि दीन में हर्ज नहीं है अर्थात ऐसी सख़्ती नहीं जो इन्सान की तबाही का कारण हो। इस लिए उसने ज़रूरतों के समय और विपत्तियों की हालत में नमाज़ों के जमा करने और छोटी करने का आदेश दिया है परन्तु इस स्थान में हमारी किसी विश्वसनीय हदीस में चार जमा करने का वर्णन नहीं है बल्कि फ़तेहुल बारी व्याख्या सही बुख़ारी में लिखा है कि घटना केवल यह हुई थी कि एक नमाज़ अर्थात अस्र की नमाज़ निर्धारित समय से तंग समय में अदा की गई। यदि आप उस समय हमारे सामने होते तो हम आपको थोड़ा बिठा कर पूछते'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह विरोधी को संबोधित करके फ़र्मा रहे हैं "कि क्या यह सर्व सहमती वाली रिवायत है कि चार नमाज़ें फ़ौत हो गई थीं। चार नमाज़ें तो ख़ुद शरियत के अनुसार जमा हो सकती हैं अर्थात ज़ुहर और अस्र। और मग़रिब और इशा। हाँ एक कमज़ोर रिवायत में है कि ज़ुहर और अस्र और मग़रिब और इशा इकट्ठी करके पढ़ी गई थीं लेकिन दूसरी सही हदीसें इसको रद्द करती हैं और केवल यही साबित होता है कि अस्र तंग समय में पढ़ी गई थी।"

(नूरुल क़ुरआन नंबर 2 : रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 389-390)

सुलह हुदैबिया के सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के किरदार के बारे में जो लिखा गया है वह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलायाता कि वे उन्हें मक्का भेजें और वे क़ुरैश के शरीफ लोगों को बताएं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किस लिए तशरीफ़ लाए हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझ को क़ुरैश से अपनी जान का ख़ौफ़ है क्योंकि वे मेरे उनसे दुश्मनी के हाल से अवगत हैं। उनको पता है कि मैं क़ुरैश का कितना दुश्मन हूँ। मैं जिस क़दर उन पर सख़्ती करता हूँ और मेरी क़ौम बनू अदी बिन काब में से भी कोई मक्का में नहीं है जो मुझे बचाए। इसलिए उन्होंने

कुछ थोड़ा सा उदासीन होने का प्रकटन किया। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह भी अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पसनद फ़रमाते हैं तो मैं उनके पास चला जाता हूँ जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ नहीं फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ीद अर्ज़ किया कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ऐसा व्यक्ति बताता हूँ जो क़ुरैश के नज़दीक मुझसे ज़्यादा सम्मानित है अर्थात हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु। तब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब किया और अबू सुफ़ियान और अन्य क़ुरैश के शरीफ़ लोगों के पास भेजा ताकि उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु उनको ख़बर दें कि हुज़ूर जंग के वास्ते नहीं आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल काअबा के दर्शन और इस की पवित्रता के सम्मान की ख़ातिर तशरीफ़ लाए हैं।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 685 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001)(سبل الهدیٰ و الرشاد भाग 5 पृष्ठ 46 फ़ी غزوة الحدیبیة दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इस की यह तफ़सील हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में वर्णन हो चुकी है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि "जब सुलह हुदैबिया की शर्तें लिखी जा रही थीं तो इस दौरान मक्का के क़ुरैश के सफ़ीर सुहेल बिन अम्र का लड़का अबू जंदल बेड़ियों और हथकड़ियों में जकड़ा हुआ इस मज्लिस में गिरता पड़ता आ पहुंचा। इस नौजवान को मक्का वालों ने मुस्लमान होने पर क़ैद कर लिया था और सख़्त दंड दिया करते थे। जब उसे मालूम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का के इस क़दर निकट तशरीफ़ लाए हुए हैं तो वह किसी तरह मक्का वालों की क़ैद से छूट कर अपनी बेड़ियों में जकड़ा हुआ गिरता पड़ता हुदैबिया में पहुंच गया और संयोग से पहुंचा भी उस समय जब कि इस का बाप समझौते की यह शर्त लिखा रहा था कि हर व्यक्ति जो मक्का वालों में से मुस्लमानों की तरफ़ आए वह चाहे मुस्लमान ही हो उसे वापस लौटा दिया जाएगा। अबू जंदल ने गिरते पड़ते अपने आपको मुस्लमानों के सामने ला डाला और दर्दनाक आवाज़ में पुकार कर कहा कि मुसलमानो! मुझे केवल इस्लाम की वजह से यह दंड दिया जा रहा है। ख़ुदा के लिए मुझे बचाओ। मुस्लमान इस नज़ारा को देखकर तड़प उठे परन्तु सुहेल भी अपनी ज़िद पर उड़ गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहने लगा। यह पहली मांग है जो मैं इस समझौते के अनुसार आपसे करता हूँ और वह यह कि अबू जंदल को मेरे हवाला कर दो। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अभी तो समझौते पूर्ण लिखा नहीं गया। "अभी तो बात हो रही है कोई फाईनल तो नहीं हुआ।" सुहेल ने कहा कि यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू जंदल को नहीं लौटाया तो फिर इस समझौते की कार्रवाई ख़त्म समझें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "मुआमला को ख़त्म करने के लिए कि "आओ आओ। जाने दो और हमें उपकार रूप में ही अबू जंदल को दे दो। सुहेल ने कहा नहीं नहीं यह कभी नहीं होगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया सुहेल! ज़िद न करो मेरी यह बात मान लो। सुहेल ने कहा मैं यह बात कदापि नहीं मान सकता। इस अवसर पर अबू जंदल ने फिर पुकार कर कहा हे मुसलमानो क्या तुम्हारा एक मुस्लमान भाई इस शदीद दंड की अवस्था में मुशरिकों की तरफ़ वापस लौटा दिया जाएगा? यह एक विचित्र बात है कि उस समय अबू जंदल ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अपील नहीं की बल्कि मुसलमानों से अपील की जिसकी वजह शयद यह थी कि वह जानता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में चाहे कितना ही दर्द हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी अवस्था में समझौते की कार्रवाई में रूकावट नहीं पैदा होने देंगे। परन्तु शायद मुसलमानों से वह यह आशा रखते थे कि वे शायद ग़ैरत में आकर उस समय जबकि अभी समझौते की शर्तें लिखी जा रही थीं कोई ऐसा रस्ता निकाल लें जिसमें उसकी रिहाई की सूरत पैदा हो जाए परन्तु मुस्लमान चाहे कैसे ही जोश में थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इच्छा के विरुद्ध कोई क़दम नहीं उठा सकते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ समय ख़ामोश रह कर अबू जंदल से दर्द भरे शब्दों में फ़रमाया। हे अबू जंदल! सब्र से काम लो और ख़ुदा की तरफ़ नज़र रखो। ख़ुदा तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दूसरे कमज़ोर मुस्लमानों के लिए ज़रूर ख़ुद कोई रस्ता खोल देगा लेकिन हम उस समय मजबूर हैं क्योंकि मक्का वालों के साथ समझौते की बात हो चुकी है और हम इस समझौते के ख़िलाफ़ कोई क़दम नहीं उठा सकते।

मुस्लमान यह दृश्य देख रहे थे और मज़हबी ग़ैरत से उनकी आँखों में ख़ून उतर रहा था परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने सहम कर ख़ामोश थे। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से न रहा गया। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट आए और काँपती हुई आवाज़ फ़रमाया : क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हाँ, हाँ ज़रूर हूँ। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : क्या हम सच्चाई पर नहीं और हमारा दुश्मन झूठा नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ, हाँ ज़रूर ऐसा ही है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तो फिर हम अपने सच्चे दीन के विषय में यह अपमान क्यों सहन करें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हालत को देख कर संक्षित शब्दों में फ़रमाया देखो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मैं ख़ुदा का रसूल हूँ और मैं ख़ुदा की इच्छा को जानता हूँ और इस के ख़िलाफ़ नहीं चल सकता और वही मेरा सहायक है'' अर्थात अल्लाह तआला ही मेरा सहायक है। "परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत की बेचेनी प्रत्येक क्षण बढ़ता जा रहा था। कहने लगे क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमसे यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हाँ मैं ने ज़रूर कहा था परन्तु क्या मैंने यह भी कहा था कि यह तवाफ़ ज़रूर इसी वर्ष होगा? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं ऐसा तो नहीं कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तो फिर प्रतीक्षा करो तुम इंशाअल्लाह ज़रूर मक्का में दाख़िल होगे और काअबा का तवाफ़ करोगे। परन्तु इस जोश की स्थिति में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तसल्ली नहीं हुई लेकिन चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का विशेष रोब था इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से हट कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और उनके साथ भी इसी किस्म की जोश की बातें कीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इसी किस्म के उत्तर दिए परन्तु साथ ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नसीहत के रंग में फ़रमाया। देखो उमर सँभल कर रहो और ख़ुदा के रसूल के कंधे पर जो हाथ तुमने रखा है उसे ढीला न होने दो क्योंकि ख़ुदा की क़सम यह व्यक्ति जिसके हाथ में हमने अपना हाथ दिया है बहरहाल सच्चा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उस समय मैं अपने जोश में ये सारी बातें कह तो गया परन्तु बाद में मुझे सख़्त शर्म हुई और मैं तौबा के रंग में इस कमज़ोरी के प्रभाव को धोने के लिए बहुत से नफ़ली कार्य किए। अर्थात सदक़े किए, रोज़े रखे, नफ़ली नमाज़ें पढ़ीं और ग़ुलाम आज़ाद किए ताकि मेरी इस कमज़ोरी का दाग़ चला जाए।''

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 766-768)

हज़रत ख़लीफ़ राबे रहमाहुल्लाह तआला ने जलसा पर अपनी ख़िलाफ़त से पहले एक तक़रीर की थी। जलसे पर तक़रीर किया करते थे। इसका इस सम्बन्ध में एक हिस्सा मैं वर्णन करता हूँ। कहते हैं कि "इस में कोई संदेह नहीं कि दर्द तकलीफ़ की वह चीख़ जो प्रश्न बन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल से निकली दूसरे बहुत से सीनों में भी घुट्टी हुई थी। जबकि इस में कोई संदेह नहीं कि जिन भावनाओ को उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भाषा दी वे केवल एक उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ही की भावनाएं नहीं बल्कि औरों के भी थी और सैंकड़ों सीनों में इसी किस्म के विचार बेचैनी उत्पन्न किए हुए थे लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो उनके इज़हार का साहस किया, यह एक ऐसी चूक हो गई कि इसके पश्चात् समस्त आयु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस से पशेमान रहे। बहुत रोज़े रखे। बहुत इबादतें कीं। बहुत सदक़ात दिए और इस्तग़फ़ार करते हुए सजदा गाहों को गीला किया लेकिन शर्मिंदगी की प्यास नहीं बुझी। हुदैबिया की बेचैनी तो अस्थाई थी जिसे बहुत जल्द आसमान से नाज़िल होने वाली रहमतों ने संतावना में बदल दिया परन्तु वह बेचैनी जो इस जल्दबाज़ी के प्रश्न ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में पैदा हुई वह एक सदैव की बेचैनी बन गई जिसने कभी आप रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ नहीं छोड़ा। हमेशा हसरत से यही कहते रहे कि काश मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वह प्रश्न न किया होता।'' कहते हैं कि" बारहा में यह सोचता हूँ कि मृत्यु के अंतिम क्षण में आख़िरी साँसों में हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु जब لَا لِيْ وَلَا عَلَيَّ को बार बार पढ़ रहे थे कि हे ख़ुदा मैं तुझसे अपनी नेकियों का बदला नहीं मांगता तू मेरी ग़लतियाँ माफ़ कर दे तू समस्त ग़लतियों से बढ़कर इस एक ग़लती का ख्याल आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बेचैन किए हुए होगा जो मैदान हुदैबिया में आप रज़ियल्लाहु अन्हु से सरज़द हुई। सुलह नामा की तहरीर के समय सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो की बेचैनी और दिल शिकस्तगी की अवस्था देख कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल की अवस्था का रहस्य आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आसमानी आक़ा और बेहद मुहब्बत करने वाले रफीक-ए-आला के सिवा और कोई नहीं जानता लेकिन इन तीन सादा से जुमलों में जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के उत्तर में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुख मुबारक से निकले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़ौर करने वालों के लिए बहुत कुछ दिया।''

(खुत्बाते ताहेर(भाषण जलसा सालाना ख़िलाफ़त से पूर्व पृष्ठ 428)

सुलह हुदैबिया के अवसर पर मुस्लमानों और मक्का के क़ुरैश के मध्य जो अनुबंध हुआ इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के भी हस्ताक्षर थे। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि "इस अनुबंध की दो प्रतियाँ बनाई गईं और बतौर गवाह के फ़रीक़ैन के असंख्य सम्मानिय लोगों ने उन पर अपने हस्ताक्षर किए। मुस्लमानों की तरफ़ से हस्ताक्षर करने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ,अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू उबेयद: रज़ियल्लाहु अन्हु थे। अनुबंध के पूर्ण होने के बाद सुहेल बिन अम्र मुआहिदा की एक नक़ल लेकर मक्का की तरफ़ वापस लौट गया और दूसरी नक़ल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास रही।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 769)

सुलह हुदैबिया से वापसी के बारे में सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है कि "क़ुर्बानी इत्यादि से फ़ारिग़ हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना की तरफ़ वापसी का आदेश दिया। इस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुदैबिया में आए कुछ बीस दिन हो चुके थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वापस यात्रा में उस्फ़ान इस के निकट رَاغُ الْغَمِيْمِ में पहुंचे।'' उस्फ़ान मक्का से 103 किलो मीटर की दूरी पर है और كُرَاعُ الْغَمِيْم, उस्फ़ान से आठ मील की दूरी पर एक वादी है। "और यह रात का समय था तो ऐलान करा के सहाबा को जमा करवाया "आपने'' और फ़रमाया कि आज रात मुझ पर एक सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे दुनिया की सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब है और वह यह है।" सूर: फ़तेहां के बारे में।'' ''إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِيْنًا لِّيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا وَّيَنْصُرَكَ اللهُ نَصْرًا عَزِيْزًا'' (अल् फ़तह : 2-4) ... सूर: फ़तह की ये दो से चार आयतें हैं। फिर इसी तरह चलता है और 28 आयत यह है कि ''لَقَدْ صَدَقَ اللهُ رَسُوْلَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَآءَاللهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ '' (अल् फ़तह : 28) "अर्थात हे रसूल हमने तुझे एक महान विजय प्रदान की है ताकि हम तेरे लिए एक ऐसे दौर का आरंभ करा दें जिसमें तेरी अगली और पिछली समस्त कमज़ोरियों पर क्षमा का पर्दा पड़ जाए और ताकि ख़ुदा अपनी नेअमत को तुझ पर पूर्ण करे और तेरे लिए सफ़लता के सीधे रस्ते खोल दे और ज़रूर ख़ुदा तआला तेरी ज़बरदस्त सहायता फ़रमाएगा हक़ यह है कि ख़ुदा ने अपने रसूल के इस स्वप्न को पूरा कर दिया जो उसने रसूल को दिखाया था। क्योंकि अब तुम इं शा अल्लाह ज़रूर ज़रूर अमन की हालत में मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल होगे और क़ुर्बानीयों को ख़ुदा की राह में पेश करके अपने सिर के बालों को मुंडवाओगे या कुतरवाओ गे और तुम पर कोई भय नहीं होगा। अर्थात यदि तुम इस वर्ष मक्का में दाख़िल हो जाते तो यह प्रवेश अमन का नहीं होता बल्कि जंग और ख़ूँरेज़ी का प्रवेश होता परन्तु ख़ुदा ने ख़ाब में अमन का प्रवेश दिखाया था। इस लिए ख़ुदा ने इस वर्ष अनुबंध के नतीजा में अमन की सूरत पैदा कर दी है और अब जल्द तुम ख़ुदा की दिखाई हुई ख़ाब के अनुसार अमन की हालत में मस्जिद हराम में दाख़िल होगे। इस लिए ऐसा ही हुआ।

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह आयात सहाबा को सुनाई तो चूँकि कुछ सहाबा के दिल में अभी तक सुलह हुदैबिया की तल्ख़ी बाक़ी थी वे हैरान हुए कि हम तो बज़ाहिर नाकाम हो कर वापस जा रहे हैं और ख़ुदा हमें फ़तह की मुबारकबाद दे रहा है यहाँ तक कि कुछ जल्दबाज़ सहाबा ने इस किस्म के शब्द भी कहे कि क्या यह फ़तह है कि हम तवाफ़ बैतुल्लाह से वंचित हो कर वापस जा रहे हैं? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक यह बात पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और एक मुख़्तसर सी तक़रीर में जोश के फ़रमाया : यह बहुत बेहूदा आरोप है क्योंकि ग़ौर किया जाए तो वाक़ई हुदैबिया की सुलह हमारे लिए एक बड़ी भारी फ़तह है। क़ुरैश जो हमारे ख़िलाफ़ मैदान-ए-जंग में उतरे हुए थे उन्होंने ख़ुद जंग को तर्क करके अमन का अनुबंध कर लिया है और अगले वर्ष हमारे लिए मक्का के दरवाज़े खोल देने का वादा किया है और हम अमन और सलामती के साथ मक्का वालों की उपद्रवों से सुरक्षित हो कर और भविष्य में विजय की खुशखबरी पाते हुए वापस जा रहे हैं। अत: निसंदेह यह एक महान विजय है। क्या तुम लोग उन नज़ारों को भूल गए कि यही क़ुरैश ओहद और अहज़ाब की जंगों मैं किस तरह तुम्हारे ख़िलाफ़ चढ़ाईयां कर कर के आए थे और यह ज़मीन बावजूद फ़राख़ी के तुम पर तंग हो गई थी और तुम्हारी आँखें पथरा गई थीं और कलेजे मुँह को आते थे परन्तु आज यही क़ुरैश तुम्हारे साथ अमन और सलामती का अनुबंध कर रहे हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम समझ गए। हम समझ गए। जहां तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नज़र पहुंची है वहां तक हमारी नज़र नहीं पहुँचती परन्तु अब हमने समझ लिया है कि वाक़ई यह अनुबंध हमारे लिए एक भारी विजय है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस तक़रीर से पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी बड़ी परेशानी में थे। इस लिए वह ख़ुद वर्णन करते हैं कि हुदैबिया की वापसी पर जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रात के वक़्त सफ़र में थे तो उस समय मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करके कुछ कहना चाहा परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे। मैं ने दुबारा, तीन बार अर्ज़ किया परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी प्रकार ख़ामोश रहे। मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस ख़ामोशी पर बहुत दुख हुआ और मैं अपने नफ़्स में यह कहता हुआ कि उमर तू तो हलाक हो गया कि तीन दफ़ा तू ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित किया परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नहीं बोले। इस लिए मैं मुस्लमानों की भीड़ में से सबसे आगे निकल आया और इस दुख में परेशान होने लगा कि क्या बात है? और मुझे डर पैदा हुआ कि कहीं मेरे बारे में कोई क़ुरआन कीआयत नाज़िल न हो जाए। इतने में किसी व्यक्ति ने मेरा नाम लेकर आवाज़ दी कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने याद फ़रमाया है। मैं ने कहा कि बस हो न हो मेरे विषय कोई क़ुरआन की आयत नाज़िल हुई है। इस लिए मैं घबराया हुआ जल्दी-जल्दी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ करके आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास में आ गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मुझ पर इस समय एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे दुनिया की समस्त वस्तुओं से ज़्यादा महबूब है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सूर: फ़तह की आयात तिलावत फ़रमाई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या यह सुलह सच में इस्लाम की फ़तह है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ निसंदेह यह हमारी फ़तह है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तसल्ली पा कर ख़ामोश हो गए। इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना में वापस तशरीफ़ ले आए।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 770 से 772)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 200-243)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "सुलह हुदैबिया के अवसर पर रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुशरेकीन मक्का से सुलह कर ली जिसकी वजह से सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो के अंदर इस क़दर बेचैनी पैदा हो गई कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा आदमी रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गया और उन्होंने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क्या अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से

वादा नहीं किया था कि हम विजय प्राप्त करेंगे या क्या इस्लाम के लिए विजय निश्चित नहीं थी? रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्यों नहीं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा फिर हमने दब कर सुलह क्यूँ-कर ली? रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया बेशक ख़ुदा तआला ने वादा किया था कि हम विजय प्राप्त करेंगे परन्तु यह नहीं था कि इसी वर्ष करेंगे।

(ख़ुतबाते महमूद भाग 30 पृष्ठ 220)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह वर्णन अभी चल रहा है। इं शा अल्लाह आगे भी चलता जाएगा। इस समय मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा जिनके जनाज़े पढ़ाने हैं। इस में से पहला वर्णन आदरणीय मलिक मुहम्मद यूसुफ़ सलीम साहिब का है जो शोबा आशुलिपि के इंचार्ज थे। छयासी 86 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप अपने ख़ानदान में अकेले अहमदी थे। उन्होंने 1952 ई. में अहमदियत क़बूल की थी। उनके बड़े भाई ने उन को रेल में नौकरी दिलवाई। उस समय वहां चीफ़ इंजीनियर मीर हमदुल्लाह साहिब जो थे वह अहमदी थे। अल्फ़ज़ल वहां आया करता था और मीर हमीदुल्लाह साहिब तब्लीग़ भी करते थे। अल्फ़ज़ल पढ़ कर यह अहमदी हुए। बहरहाल जब उनके घर वालों को पता लगा तो उन्होंने बड़ा डराया धमकाया। जान से मारने की धमकियाँ दीं कि अहमदियत छोड़ दो लेकिन उन्होंने अपना घर-बार छोड़ दिया और अहमदियत को नहीं छोड़ा। आख़िर जब बहुत ज़्यादा ख़तरा बढ़ गया और घर-बार जो छोड़ा तो वह इस तरह था कि उनके पिताा ने उन्हें एक दिन रात को अपने बेटों से छिपा कर कहा कि यहां से चले जाओ और यहां कभी न आना अन्यथा तुम्हारी जान को ख़तरा है। उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर से अरबी में मास्टर्ज़ की फिर 1958 ई. में जामिआ अहमदिया में दाख़िला लिया। 1963 ई. में जामिआ से फ़ारिग़ हुए। फिर देश सैफ़ुलरहमान साहिब के साथ जो मुफ़्ती सिलसिला थे, इफ्ता के दफ़्तर में उनका चयन हुई। 1967 ई. में उनका तबादला आशुलिपि के विभाग में हुआ। जब मौलाना मुहम्मद याक़ूब ताहिर साहिब इंचार्ज आशुलिपि की वफ़ात हुई तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने उनको उनकी जगह अपने पास आशुलिपि के विभाग में रख लिया। 1985 ई. तक ये विभाग आशुलिपि के इंचार्ज रहे। आशुलिपि के दफ़्तर में आपके ज़िम्मा ख़लीफ़तुल मसीह के ख़ुतबात, खिताबात, प्रोग्रामों की रिपोर्टस, दौराजात की रिपोर्टस इत्यादि तैयार करने का काम था। 1978 ई. में कसर-ए-सलीब कान्फ्रैंस जो लंदन में हुई थी और उस में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने शिरकत की थी इस में भी आप हज़ूर के साथ थे और रिपोर्ट तैयार की थी। हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के साथ सवानेह फ़ज़ल-ए-उमर की तैयारी में भी उन्होंने काफ़ी सहायता की है और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने उनका बड़े अहसन रंग में वर्णन किया हुआ है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह 1983 ई. में आस्ट्रेलिया, फिजी और सिंगापुर का दौरा किया तो मलिक यूसुफ़ सलीम साहिब भी आपके साथ थे और हिज्रत के बाद ख़ुतबात की आडियो कैसेटस की कापियाँ तैयार करने का काम उन्होंने बहुत अहसन रंग में किया और क्योंकि एसावधानी करनी होती थी तो ख़ुद फैसलाबाद जा के किसी घर में यह आडियो कैसेट तैयार करते थे और फिर वापस ले कर आते थे। कुछ वर्ष फ़ील्ड में यह मुरब्बी सिलसिला भी रहे। ताहिर फ़ाउंडेशन में ख़ुतबाते ताहिर पर काम करने की उनको तौफ़ीक़ मिली। प्राईवेट सैक्रेटरी में शूरा की कार्यवाहियां लिखने की तौफ़ीक़ मिली। बहरहाल रिटायरमैंट के बाद री एंप्लॉई होते रहे। फिर उन्होंने बीमारी की वजह से 2013 ई. में छुट्टी ले ली। उनकी दो शादियां थीं। पहली शादी से उनकी एक बेटी पैदा हुई उसके बाद उनकी पत्नी फ़ौत हो गईं। फिर दूसरी शादी हुई जिससे दो बेटे और तीन बेटियां हैं।

उनकी बेटी क़ुदसिया महमूद सरदार कहती हैं कि हमारे पिता ने अल्लाह तआला से सम्बन्ध जोड़ा और हमें भी इस की बहुत ज़्यादा तलक़ीन की। नमाज़ों की सख़्ती से पाबंदी करवाते थे। नमाज़ लेट पढ़ने पर नाराज़ होते। तहज्जुद में बहुत रो-रो कर दुआ करते थे। क़ुरआन का एक पारा रोज़ाना पढ़ते थे और बीमारी में भी यही था कि पूछते रहते थे कि नमाज़ का समय हुआ कि नहीं। बड़ी फ़िक्र थी उनको नमाज़ की। ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इताअत उन्होंने हम में कूट कूट कर भरी। ख़िलाफ़त से बेहद मुहब्बत थी। कहते थे कि इताअत-ए-ख़िलाफ़त में ही सारी बरकतें हैं। अहमदियत के लिए बड़ी मुश्किलात बर्दाश्त कीं। रशीद तुय्यब साहिब अस्सिटैंट प्राईवेट सैक्रेटरी हैं, कहते हैं ख़िलाफ़त सालिसा के समय में मलिक मुहम्मद यूसुफ़ सलीम साहिब विभाग आशुलिपि में आ गए। इस विभाग में लंबा अरसा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और भाषण इत्यादि को लिखित रूप में लाते थे। जमाती अख़बार अल्फ़ज़ल के लिए रिपोर्टें तैयार करते थे। निहायत ज़िम्मेदारी से और मुनज़्ज़म और उच्चतम तरीक़ पर काम करने वाले थे। साहित्य का मयार भी उनका निहायत आला होता था। और जैसा कि मैंने बताया ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह और ख़लीफ़तुल मसीह राबे के साथ उनको बैरूनी क़ाफ़िलों में यूरोप में भी जाने का अवसर मिला। बड़ी बारीक बीनी से अपना काम किया करते थे। एक-एक शब्द को ग़ौर-ओ-फ़िक्र के साथ सावधान हो कर लिखते थे और दुआ करके लिखते थे कि कहीं असल अर्थ से कोई अंतर न रह जाए जब 2013 ई. में उन्होंने रिटायरमैंट ली है तब भी शूरा की रिपोर्ट की तैयारी में यदि कोई दिक़्क़त आ रही हो तो प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में जब भी आपको बुलाया जाता तुरंत तशरीफ़ ले आते और हमेशा इस बात का इज़हार करते कि मैं अपने लिए सआदत समझता हूँ ।

मेरे दिमाग़ में भी हमेशा उनके बारे में यही तसव्वुर है कि एक शांतिमय व्यक्तिव जो अपने काम में मगन है और उन्होंने वक़्फ़ का भी हक़ अदा किया। ख़ामोशी से सारे काम करने वाले थे। कोई मांग नहीं। बड़ी सादगी से रहने वाले। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा वर्णन आदरणीय शुऐब अहमद साहिब वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी का है जो बशीर अहमद साहिब काला अफ़ग़ानां मरहूम दरवेश क़ादियान के पुत्र थे। 56 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन 1987 ई. में सिलसिले की नौकरी शुरू कर ली। सदर अंजुमन अहमदिया के विभिन्न विभागों में कारकुन और अफ़्सर और नाज़िर के रूप में ख़िदमत बजा लाते रहे। इंचार्ज दफ़्तर उल्या और आडिटर सदर अंजुमन अहमदिया और नाज़िर बैतुल माल ख़र्च, नाज़िम वक़्फ़-ए-जदीद माल, अफ़्सर जलसा सालाना और सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत के तौर पर उन्हें ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। उनका अरसा ख़िदमत 33 वर्ष से अधिक है। इबादत की तरफ़ उनकी भी बड़ी तवज्जा थी। नमाज़ तहज्जुद और नवाफ़िल की अदायगी में बड़ी बाक़ायदगी थी। ख़िलाफ़त की इताअत का भी आला मयार था। हमेशा ये कहते थे जो भी हिदायत आए फ़ौरी तामील करनी है। क़ुरआन-ए-मजीद का गेहरा इल्म था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए सिलसिला की पुस्तकों का भी गहरा अध्यन था। देनी मालूमात बड़ी वसीअ थीं। हर विषय पर तक़रीर की प्रतिभा थी। अत्यधिक अच्छा व्यवहार करने वाले और मिलनसार इन्सान थे। हर वर्ग के लोगों से प्यार और मुहब्बत करने वाले व्यक्ति थे। ज़रूरतमंदों और अपने अधीन काम करने वालों का पूरा ख़्याल रखते थे। क़ादियान में हर व्यक्ति उनकी बड़ी प्रशंसा कर रहा है। बुलंद हौसला और शुक्रगुज़ार भी थे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे शामिल हैं। यह जलालुद्दीन साहिब नय्यर सदर सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान के दामाद थे।

रफ़ीक़ बेग़ साहिब नाज़िर बैतुल माल आमद क़ादियान लिखते हैं कि उनके साथ अठारह वर्ष मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत और दफ़्तर जलसा सालाना क़ादियान में ख़िदमत का अवसर मिला। आप अपने अमली नमूने से ख़िदमत करने वालों को अपने साथ लेकर चलते थे। जलसा सालाना के दिनों में भी रात तीन चार बजे तक दफ़्तर में रहते और क़ियाम गाहों का निरिक्षण करते। कहीं कमी बेशी नज़र आती तो तुरंत जा के उसको ठीक करते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों का यथा संभव ख़्याल रखने की हमेशा हर कारकुन को नसीहत किया करते थे। यदि किसी कारकुन से ग़लती हो जाती तो मेहमान से ख़ुद क्षमा मांगते। उनके बहनोई ने भी लिखा है कि यह कहा करते थे कि मैंने दुनिया में कभी किसी से दुश्मनी नहीं की। वकालते माल तहरीक जदीद के एक इन्सपैक्टर लिखते हैं कि इंडिया के राज्यों केराला, तामिल नाडू में उनका 75 दिनों का लंबा दौरा था। इस

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

दौरान मैं बीमार हो गया तो मेरी देख भाल भी उन्होंने इस तरह की जिस तरह कोई माता पिता करते हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को, पत्नी को सब्र-ओ-सुकून अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन आदरणीय मक़सूद अहमद साहब भट्टी मुबल्लिग़ सिलसिला क़ादियान का है जो 18 मई को 52 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह मरहूम जमाअत अहमदिया चारकोट ज़िला राजौरी राज्य जम्मू-कश्मीर से सम्बन्ध रखते थे। उनकी ख़िदमत का समय तीस वर्ष पर आधारित है। उनको अमीर ज़िला लखनऊ और तक़रीबन एक वर्ष मुबल्लिग़ इंचार्ज श्रीनगर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 2017 ई. से वफ़ात तक फ़ुल टाइम मर्कज़ी क़ाज़ी के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। क़ज़ा में बड़ी चुस्ती के साथ और इख़लास के साथ अपने काम सरअंजाम दे रहे थे। दर्जनों मुक़द्दमात के फ़ैसले किए। अपने ज़िम्मा कामों की बड़ी फ़िक्र रहती थी। बल्कि जब बीमार थे और पिछले दिनों हस्पताल में थे, उनको भी कोरोना हो गया था तो हस्पताल में भी कामों की फ़िक्र रहती थी। बड़े मिलनसार, ख़ुश-मिज़ाज, दिलेर, विवेकवान और कटिबद्ध वाक़िफ़ ज़िंदगी थे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पिताा और तीन भाईयों के अतिरिक्त पत्नी और तीन बच्चियां शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी बच्चियों की भी हिफ़ाज़त फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला जनाज़ा है, वर्णन है जावेद इक़बाल साहिब फैसलाबाद का, जो छयासठ वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे तल्हा जावेद लिखते हैं कि उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पड़ दादा बाबा चकीरा के माध्यम से आई। जिनका नाम उनके कार्य चक्की बनाने और उसकी मरम्मत की वजह से प्रसिद्ध था। गलियों में आवाज़ें लगा कर अपना काम किया करते थे और इस दौरान वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कविताएँ ऊँची आवाज़ में गुनगुनाते रहते थे ताकि तब्लीग़ के रास्ते भी खुलते रहें। अल्लाह के फ़ज़ल से बाक़ायदा नमाज़ों के अतिरिक्त तहज्जुद गुज़ार थे, तहज्जुद पढ़ने वाले थे। घरवालों को भी बाजमाअत नमाज़ पढ़ने की तलक़ीन करते बल्कि घर में बाजमाअत नमाज़ व्यवस्था थी। क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत बाक़ायदा करते, साथ अनुवाद भी पढ़ते। ख़ुतबा सुनने का ख़ुसूसी एहतिमाम था। समस्त घर वालों को साथ बिठाते और एम.टी.ए पर ख़ुतबा सुनते। ख़िदमत दीन में जुनून की हद तक रुचि थी। 84 ई. के हालात के बाद जब जमाअती आडियो कैसेटस के माध्यम से ख़लीफ़ा का ख़ुतबा जमाअतों में पहुंचाया जाता था तो कैसेट थैले में डाल कर साईकल पर गांव-गांव जा कर पहुंचाया करते थे और जब एम.टी.ए का आग़ाज़ हुआ तो अपने घर में डिश लगवाया और लोगों को घर बुला के ख़ुतबा सुनवाया करते थे। उनके पीछे रहने वालों में पिताा और पत्नी अम्तुल बासित और दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीया मदीहा नवाज़ पत्नी नवाज़ अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला घाना का है जो 16 अप्रैल को छत्तीस वर्ष की आयु में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह घाना में ही थीं। वहीं उनकी वफ़ात हुई। उनके पति मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि शादी के सोला वर्षों में विनीत ने उन्हें बेशुमार ख़ूबीयों से परिपूर्ण पाया। बेहद हौसलामंद, सब्र करने वाली, हमदर्द और जज़्बा-ए-ईसार से परिपूर्ण महिला थीं। बेहतरीन माँ और वफ़ादार पत्नी थीं। घाना में जहां भी अवसर मिलता बच्चों की क्लासें लेतीं। अपने बच्चों को साथ बिठा कर क़ुरआन पढ़ातीं। ससुराली रिश्तेदारों के साथ हुस्न-ए-सुलूक से पेश आतीं और किसी की सख़्त गोई का कभी उत्तर नहीं देतीं बल्कि बर्दाश्त करतीं और ख़ाकसार को भी बर्दाश्त करने को कहतीं। दुआ की तलक़ीन करती रहतीं। बच्चों की तर्बीयत के मुआमला में भी छोटी-छोटी बातों का ख़्याल रखने वाली थीं। ख़िलाफ़त से वाबस्तगी के लिए अक्सर बच्चों के साथ ख़िलाफ़त की बरकात का वर्णन करती थीं। एक ग़रीबों का ख़याल रखने वाली और नेक महिला थीं। पीछे रहने वालों में पति के अतिरिक्त तीन बच्चे फरात सेफ़ी आयु तेराह वर्ष, फेयज़ेह आयु आठ वर्ष, ज़ोहरा आयु एक वर्ष शामिल हैं। सब बच्चे मा शा अल्लाह वक़्फ़ नौ में शामिल हैं। अल्लाह तआला उनकी दुआएं उनके बच्चों के हक़ में क़बूल फ़रमाए और उनके दर्जात बुलंद करे। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हुए कहा : मैंने जब हुज़ूर अनवर के चेहरे मुबारक को देखा तो मेरे दिल की धड़कन ख़ुशी के मारे तेज़ हो गई। मै आज बहुत ख़ुश हूँ।

एक अहमदी दोस्त Ogun Sen साहिब कहने लगे : मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। इस मुलाक़ात का हुस्न मेरे लिए नाक़ाबिल वर्णन है।

एक ग़ैर अहमदी दोस्त Cen Utebey साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए बताया यह मुलाक़ात मेरे लिए नाक़ाबिल-ए-वर्णन भी है और नाक़ाबिल विश्वसनीय भी। आपके व्यक्तित्व में एक कशिश पाई जाती है।

एक ग़ैर अहमदी दोस्त Abdullah साहिब कहने लगे कि : ख़लीफ़ा की मुलाक़ात से मुझे ह्रदय की संतुष्टि मिली। मैंने देखा कि इस फ़िज़ा में रूहानियत की लहरें थीं।

एक दोस्त Ertekin साहिब ने बताया कि : हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की कैफ़यात को वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। समय के ख़लीफा का व्यक्तित्व मुहब्बत और ह्रदय को संतुष्टि देने वाला व्यक्तित्व है।

गुल दास्तान साहिबा कहती हैं आपके पवित्र व्यक्तित्व को आपके नाम के अनुसार पाया। आपका चेहरा इन्सान को ख़ुशी और संतुष्टि प्रदान करता है।

Sara Yorlu साहिबा ने वर्णन किया : आप का व्यक्तित्व को मैंने हमदर्दाना पाया। हुज़ूर अनवर ने बहुत मुहब्बत से मेरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया। इतना बुलंद स्थान होने के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर ने हमें इतना ज़्यादा समय और ध्यान इनायत किया।

Esra साहिबा ने कहा : मैं हुज़ूर के सामने अपने आपको किसी और संसार में महसूस कर रही थी। आप का व्यक्तित्व प्रभावी है।

एक औरत Ayben साहिबा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ होने वाली मुलाक़ात के सम्बन्ध में बताया कि : इस मुलाक़ात में हर चीज़ बहुत ही प्यारी थी। इस मुलाक़ात में जब हमारे भाई Hasan Odabas ने उठ कर कहा कि प्यारे आक़ा हम सब तुर्की अहमदी आपसे मुहब्बत करते हैं तो मैं बहुत ख़ुश हुई क्योंकि उन्होंने प्रत्येक तुर्की अहमदी के दिल की भावनाएं प्रकट कर दी थी। तथा इतने ज़्यादा तुर्की अहमदियों को एक जगह देखकर मुझे दिली ख़ुशी हुई।

दल में शामिल एक औरत Akcana साहिबा ने बताया : इतना मुकम्मल निज़ाम देख कर इन्सान के इन्द्रियां शंका और प्रश्न उठती है कि कहीं यह निज़ाम वास्तव में ख़ुदा की ओर से ही न हो।

तुर्की लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ये मुलाक़ात साढ़े आठ बजे तक जारी रही। मुलाक़ात के अंत में सब लोगों ने फ़ैमिली वाइज़ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। दल के सदस्यों भावनाओ के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के हाथों को चूमते। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक दल के सदस्यों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटे बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं।

सलोवीयन दल की मुलाक़ात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क स्लोवेनिया से आने वाले दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। स्लोवेनिया के देश से चार लोगों पर आधारित दल था।

मुलाक़ात के आरम्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने समस्त सदस्यों से उनका हाल दरयाफ़्त फ़रमाया और सबसे बारी-बारी परिचय प्राप्त किया।

दल की एक मेंबर ने बताया कि वह botanical garden में काम करती हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या आपके गार्डन में संसार के विभिन्न देशों के पौधे उपस्थित हैं जिस पर उन्हों ने कहा कि उपस्थित हैं।

दल की दो महिला मेंबर ट्रांसपोर्ट के विभाग से सम्बन्ध रखती थीं। ये सदस्य जलसा सालाना में पहली बार शामिल हुए थे। सदस्यों ने बताया कि हमने अपने जीवन में मुस्लमानों का ऐसा बड़ा प्रोग्राम पहली बार देखा है। हम इससे बहुत प्रभावित हैं। हर चीज़ व्यवस्थित थी और सब एक दूसरे से मुहब्बत और प्यार से प्रस्तुत आ रहे थे। इंतिज़ामात बहुत अच्छे थे उन्होंने बताया कि वह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पवित्र व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे और इस बात का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल

अज़ीज़ का व्यक्तित्व एक नूर से परिपूर्ण व्यक्तिव है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हमारे प्रोफ़ैशन के हवाला से भी हम से बात की और हम इस्लाम के सम्बन्ध में प्रत्येक दृष्टि से यहां से संतुष्ट हो कर वापस जा रहे हैं।

मुलाक़ात के अंत में सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें खिचवाई

अरब लोगों की मुलाक़ात

इसके बाद अरब लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात शुरू हुई। अरब लोगों की संख्या पाँच सौ के क़रीब थी जिनमें से 300 लोगों जर्मनी के रहने वाले हैं और बाक़ी फ्रांस बेल्जियम, स्पेन और दूसरे देशों से आकर जलसे में शामिल हुए थे। मुलाक़ात के आरंभ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सबका हाल दरयाफ़त फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि फ्रांस से आने वाले लोग हाथ खड़ा करें जिस पर एक बड़ी संख्या ने अपने हाथ खड़े किए। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो-तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जर्मनी और बेल्जियम में रहने वाले अरब लोगों को चाहिए कि वह अपनी संख्या बढ़ाएं। फ्रांस वाले आगे बढ़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अरब लोगों को संबोधित करते हुए फ़रमाया : यदि आप सच समझते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले मसीह और महदी को स्वीकार कर लिया है, यदि अहमदियत को हक़ीक़ी इस्लाम समझते हुए स्वीकार किया है तो फिर आपका कर्तव्य है कि आप इस संदेश को आगे पहुंचाएं। अपने भाईयों को भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो अपने लिए पसंद करते हैं वह दूसरों के लिए भी पसंद करें। इस लिए आपका कर्तव्य है कि दूसरों को भी अहमदी बनाएँ।

एक अरब मित्र ने कहा कि मैंने यहां आकर इस्लाम की सही शिक्षा को जाना है जो कट्टरवाद का अंत करती है। जमाअत अहमदिया ही इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा प्रस्तुत करती है और इस पर अनुकरण भी करती है। आजकल इराक़ में बहुत कट्टरवादी कार्य हो रहें हैं हम किस तरह इस स्थिति से बाहर निकल सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि शाम, सीरिया और दूसरे देशों में यही हालात हैं। प्रत्येक जगह हिंसा नज़र आ रही है। ये इस बेचैनी का परिणाम है जो लोगों में पाई जाती है। लोग देख रहे हैं कि ऐसे हालात पैदा हुए हैं जहां उनको हक़ीक़ी इस्लाम नज़र नहीं आता और जो इस्लाम उन लोगों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है इसका वास्तविक इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम दुआ ही कर सकते हैं कि ख़ुदा तआला इस बेचैनी को दूर करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि : इस बेचैनी को दूर करने का ईलाज भी ख़ुदा तआला ने बता दिया था। चौदह सौ वर्ष पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माना में जब इस्लाम का नाम बाक़ी रह जाएगा, हर चीज़ बिगड़ जाएगी तो उस समय ख़ुदा तआला लोगों की हिदायत के लिए मसीह और महदी को अवतरित फ़रमाएगा और तुम उसको स्वीकार कर लेना। अत: उस मसीह और इमाम महदी को स्वीकार करने से ही आपकी बेचैनियां दूर होंगी। आज जमाअत अहमदिया ही हक़ीक़ी इस्लाम की तस्वीर प्रस्तुत करती है और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को, ज़माने के इमाम को मानने के परिणाम में ही यह हक़ीक़ी शिक्षा जमाअत में प्रचलित है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रश्न करने वाले को संबोधित करते होते हुए फ़रमाया : और भी शरीफ लोग हैं जो चाहते हैं कि संसार में अमन क़ायम हो तो आपको भी और दूसरे शरिफा को भी चाहिए कि संसार में अमन के क़ियाम का प्रयास करें।

एक अरब मित्र जिनका सम्बन्ध मिडल ईस्ट से है उन्होंने कहा कि इराक़ में इस हिंसा, चरमपंथी के अंत के लिए क्या-किया जाए। क्या वहां मुबल्लेगीन भिजवाए जाएं या फिर क्या तरीक़ धारण किया जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि केवल इराक़ ही नहीं, लीबिया भी है जहां विभिन्न क़बायल हिंसा कर रहे हैं और सीरिया भी है। यहां भी विभिन्न गिरोह हिंसा में पड़ गए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हुकूमतें मिलकर बैठें। इस्लामी देशों की आर्गेनाईज़ेशनज़ (OIC) बजाय ग़ैर देशों और बड़ी ताक़तों की ओर देखने के अपने देशों के लीडर्ज़ को क्यों इकट्ठा नहीं करतीं? अपने लीडरों को आर्गेनाईज़ करें और मिल कर बैठ जाएँ। इंसानों की इन्सानियत को क़ायम करें। जब हम सबका एक ही ख़ुदा है एक ही रसूल है और एक ही किताब के मानने वाले हैं तो अपने मतभेद छोड़ कर इन्सानी क़दरों को आपनाए और इकट्ठे हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह एक आदमी का कार्य नहीं है। जुमा के ख़ुतबात में मैं ध्यान दिलाता रहता हूँ और अरब देशों के हालात का वर्णन करके जमाअत को दुआ के लिए कहता हूँ और मुस्लमान लीडरों को भी समझाता हूँ कि इकट्ठे हों और आपस में मिल बैठ कर बात करें। क्यों दूसरों के पीछे चल कर अपने आपको तबाह कर रहे हैं? यह बताना चाहिए कि हमारे मध्य जो समान चीज़ें हैं उन पर आएं और इकट्ठे हो कर बैठें। ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में यही उसूल बताया है। تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ कि एक कलमे की ओर आ जाओ जो तुम्हारे और हमारे मध्य है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अहल-ए-किताब वालों से यह उसूल चल सकता है तो मुस्लमानों के साथ क्यों नहीं चल सकता? आजकल इन्सानियत की आवश्यकता है। इन्सानी इक़दार को क़ायम करने की आवश्यकता है। सबको इस पर इकट्ठा होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। बड़ी ताक़तें इन मुस्लमान देशों को तबाह करने के लिए तैयार हैं। तो ये क्यों आपस में झगड़ रहे हैं। इकट्ठे क्यों नहीं होते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि एक चुटकुले वाली बात जो मुझे किसी ने कुछ दिन पहले भेजी है। एक आदमी दरिया में ख़ुदकुशी करने लगता है तो दूसरा उसको रोकता है और पूछता है कि तुम मुस्लमान हो? तुम्हारा किस फ़िर्क़ा से सम्बन्ध है? किस आस्था पर विश्वास रखते हो? तो वह जब बताता है कि मैं अमुक फ़िर्क़ा के साथ हूँ तो पूछने वाला कहता है कि मैं भी मुस्लमान हूँ और मेरा भी अमुक विचारधरा पर विश्वास और अमुक फ़िर्के से सम्बन्ध है। जब ख़ुदकुशी का इरादा करने वाले मुस्लमान ने बताया कि मैं अमुक मौलवी के पीछे जा कर नमाज़ पढ़ता हूँ तो यह रोकने वाला मुस्लमान कहता है कि तुम तो फिर काफ़िर हो और उसे दरिया में धक्का दे देता है कि इस कुफ़्र से बेहतर है कि तुम मर जाओ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जब हालात ऐसे हों तो फिर क्या-किया जा सकता है? अत: अपने मतभेदों को दूर करें तभी ये लोग बच सकते हैं।

एक अरब मित्र ने शीयों के सम्बन्ध में प्रश्न किया कि जमाअत उनको क्या समझती है? अहल-ए-तशीअ जो खलीफ़ा पर गंद उछालते हैं, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर गंद उछालते हैं और कुछ दूसरे सहाबा को भी बुरा भला कहते हैं उनके बारे में जमाअत की क्या राय है। क्या जमाअत उनको काफ़िर समझती है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

जो लोग सहाबा को काफ़िर कहते हैं, बदर के सहाबा और दूसरे बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को काफ़िर कहते हैं उन पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़तवा लगता है। हमारा कोई फ़तवा नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि مَنْ كَفَّرَ مُسْلِمًا عَادَ اِلَيْهِ كُفْرُهٗ ۔ अर्थात जो किसी मुस्लमान को काफ़िर कहता है तो उसका कुफ्र उसी पर लौट जाता है। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़तवा लगेगा। दूसरे किसी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

के फ़तवे की आवश्यकता ही नहीं है। हम तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़तवे की पैरवी करेंगे।

इसी मित्र ने दुबारा कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ فَبِاَیِّهِمُ اقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ अर्थात मेरे सहाबा सितारों की भांति हैं। तुम उनमें से जिसकी भी पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे। तो जो सहाबा को गालियां देता है वह भी काफ़िर है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिसको काफ़िर क़रार दे दिया मैं कौन हूँ कि उस को काफ़िर क़रार न दूं।

ये उपद्रव और फ़साद फैलाने वाले लोग थे जिन्हों ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया। ये सब बग़ावत करने वाले अपने बद-अंजाम को पहुंचे। उनके बारे में जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़तवा है वही मेरा फ़तवा है। मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाता हूँ और आपके फ़तवा पर क़ायम हूँ।

एक मित्र ने कहा कि शाम में हालात ख़राब हैं दुआ की दरख़ास्त है ।इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हर देश के अपने-अपने हालात हैं। असल में मुस्लिम उम्मा को ग़ौर करना चाहिए और दूसरी ताक़तों के हत्थे चढ़ने की बजाय हमें एक होना चाहिए। आपस में मुत्तहिद होना चाहिए। हम इन बड़ी ताक़तों से हथियार लेते हैं और एक ओर उनकी इकॉनोमी को मज़बूत करते हैं तो दूसरी ओर उन्हीं हथियारों से अपने लोगों को मारते हैं। एक ओर उन बड़ी ताक़तों की इंडस्ट्री हमारे पैसों पर चल रही है और दूसरी ओर वे ताक़तें हम को एक दूसरे के हाथों से ही मरवा रही हैं।

एक अरब मित्र ने कहा कि हमारा जो मुश्किल मसला है वह हिंसा और चरमपंथी का है। लोग इस्लाम से विमुख हो रहे हैं। उन्हें इस पर हिंसा वाले इस्लाम का कोई पर्यावाची नहीं मिल रहा। हमें जमाअत अहमदिया की शक्ल में पर शांति पूर्ण इस्लाम बदले में मिल गया है। यह हक़ीक़ी इस्लाम दूसरे सब देशों में जल्द पहुंचना चाहिए ताकि लोगों को पता चले कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा क्या है और संसार में कट्टरवादी इस्लाम के अतिरिक्त हक़ीक़ी इस्लाम पर चलने वाली जमाअत भी उपस्थित है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि। आज मैंने जर्मन मेहमानों से भाषण किया है और इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा प्रस्तुत की है। हम तो प्रयास कर रहे हैं कि हक़ीक़ी इस्लाम का संदेश संसार में फैले और हम यह प्रयास जारी रखेंगे। आप ने जलसे पर भी जमाअत की हक़ीक़ी तस्वीर को देख लिया होगा। आपको जमाअत में जो हक़ीक़ी रूह नज़र आती है, जो डिसिप्लिन और अनुशासन और एकता नज़र आती है इस से स्पष्ट हो गया होगा कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा पर चलने का भरपूर प्रयास करती है। मुलाक़ात के बाद बहुत से अरब मेहमानों ने अपने विचारों को भी प्रकट किया।

साद पुत्री ज़रूक़ साहिबा मराक़श की रहने वाली अहमदी महिला हैं और स्पेन से जलसा सालाना में शिरकत के लिए अपने ग़ैर अहमदी बहन, बहनोई और उनके दो बच्चों समेत आई थीं। उन्होंने अपने भावनाओं का प्रकटन करते हुए वर्णन किया : मैं हुज़ूर अनवर को एम.टी.ए की स्क्रीन पर तो देखती थी परन्तु जब सामने देखा तो हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक से नूर फूटता हुआ दिखाई दिया और बेसाख़ता मेरी मुख से निकला "ख़ुदा की कसम यह इन्सान नहीं बल्कि कोई फ़रिश्ता है" हमें जलसे का बहुत ज़्यादा आनंद आय, समस्त जलसे शामिल होने वालों ने अत्यधिक उच्च आचरण का प्रकटन किया। मैं अपनी ग़ैर अहमदी बहन और बहनोई को साथ लाई थी जिन्हों ने हुज़ूर अनवर के भाषण सुने से उन पर गहरा प्रभाव हुआ और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से उन दोनों ने इस जलसे पर बैअत कर ली है।

वेलेनसिया स्पेन के एक ग़ैर अज़ जमाअत इमाम और ख़तीब आदरणीय अहमद बिन अब्दुल क़ादिर बिन मुहम्मद साहिब भी इस जलसे में शामिल हुए वह कहते हैं : मुझे इस जलज़े में शमूलीयत का अवसर मिला और यहां मैंने ऐसा उच्चतम वयवस्था, हुस्ने प्रबन्ध, हुस्न स्वागत और मेहमानों का सम्मान देखा जिस की मैं यहां आने से पहले कल्पना नहीं कर सकता था। मैं सारे कर्मचारियों का दिल्ली शुक्रिया अदा करता हूँ। मुझे हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह से हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। तथा अन्य लोगों से भी मिला, हर ओर से मेरा मुस्कुराते चेहरों और गले लगा कर स्वागत किया गया।

अरबिया इब्राहीम साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : जलसे में शमूलीयत की दावत पर शुक्रिया अदा करता हूँ यहां पर दिल के साथ स्वागत और ग़ैरमामूली इंतिज़ामात को देख कर मेरी हैरत की इंतिहा न रही। मैंने अहमदियों में उस हक़ीक़ी इस्लाम की तस्वीर देखी जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ले कर आए थे। वह कहने लगे। जलसे से पूर्व मेरी इच्छा थी कि समय के ख़लीफा के दर्शन हो जाएँ। परन्तु वह इस से बढ़कर पूरे हुए क्योंकि मुझे हाथ मिलाने का सौभाग्य भी मिल गया और समय के ख़लीफा ने मुझे संबोधित भी फ़रमाया जो कि मेरे लिए बहुत गर्व और इज़्ज़त-की बात है।

फेल्स वानसू साहिब भी स्पेन से आने वाले दल में शामिल थे। उनका बुनियादी तौर पर सम्बन्ध गेम्बिया से है वह कहते हैं :

मैं बहुत ख़ुश हूँ। यहां मैंने बेशुमार ऐसे लोग देखे जो मुहब्बत करने वाले और बहुत ज़्यादा मेहमान नवाज़ हैं। मैं इस इज़्ज़त और सम्मान प्रदान करने पर जमाअत अहमदिया जर्मनी का बहुत ही शुक्रगुज़ार हूँ।

नाबती यासीन साहिब अल-जज़ायर के अहमदी हैं। उन्होंने तीन वर्ष पूर्व बैअत की थी। उन्हों ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : हर बार जलसे में शामिल होना मेरे ईमान में ग़ैर मामूली बढ़ोतरी का कारण बनता है। और प्रत्येक बार ख़ुदा तआला की अत्यधिक समर्थन के नज़्ज़ारे देखता हूँ। जलसे में मुझे महसूस हुआ जैसे मैं जन्नत में हूँ। यहां भाषाओं और स्वभावों और अलग अलग राष्ट्र के मतभेद के अतिरिक्त प्रत्येक ओर से अस्सलामो अलैकुम की आवाज़ जन्नत वालों के बारे में अल्लाह तआला के क़ौल تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ की याद दिलाती है। उन्हों ने कहा दूसरी बात जो काबिल वर्णन है वह यह है कि जलसे में आप जिससे भी मिलें वह आपसे अपनी दुनियादारी या दुनियावी मुश्किलात के बारे में बात नहीं करता बल्कि जलसे में शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति की बातों का केंद्र धार्मिक विषय बन जाता है। इस लिए ख़ुदा के ज़िक्र की बातें होती हैं और यह ऐसा एहसास है जो केवल जलसा सालाना में ही प्रदान होता है। इस लिए ख़ुदा की कसम जलसा सालाना ख़ुदा तआला के निशानों में से एक निशान है और बहुत से लोग इस निशान की महानता से अनजान से हैं।

मुराद फ़ायफ़ साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : मैं पहली दफ़ा जलसा सालाना में शामिल हुआ और इतने वसीअ पैमाने पर इस क़दर उच्चतम अनुशासन और स्वागत मेहमान नवाज़ी देखकर हैरान रह गया। हुज़ूर अनवर के भाषण ग़ैरमामूली तौर पर प्रभावी थे जिन्हें सुन कर बहुत आनंद आया। दुआ है कि हम हुज़ूर अनवर की रोशन नसाएह पर अनुकरण करने में आपके हुस्न-ए-ज़न पर पूरे उतरने वाले हों। मैंने इस जलसे से बहुत लाभ प्राप्त किया है और दुबारा आने की आशा लेकर जा रहा हूँ।

एक व्यक्ति आदरणीय अब्दुल्लाह सीरियन साहिब के पिता साहिब कई वर्षों से अहमदी हैं और ये अपने पिता साहिब के साथ रशिया में रहते थे परन्तु अब पढ़ाई के सिलसिला में हॉलैंड में रहते हैं। उनके पिता साहिब के माध्यम से उन्हें तब्लीग़ तो होती रही परन्तु अभी तक उन्होंने बैअत नहीं की थी। इस वर्ष यह अपने पिता साहिब के साथ इस जलसे में शामिल होने के लिए आए। जलसे के पहले दिन प्रश्न और उत्तर की मज्लिस के बाद हमारे मुबल्लिग़ से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के बारे में बात हुई जिसके अंत में उन्हें कहा गया कि आप ख़ुदा से यह दुआ करें कि हे अल्लाह मैं इस जलसे पर इस व्यक्ति की सच्चाई के बारे में जाँच पड़ताल करने की ख़ातिर आया हूँ तू मेरी रहनुमाई फ़र्मा। उन्होंने कहा कि मैंने इस से पूर्व भी दुआ की थी परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। उन्हें समझाया गया कि केवल एक बार दुआ करना पर्याप्त नहीं है क्योंकि दुआ के लिए कई शरायत हैं और उनको समक्ष रखते हुए आपको दर्द के साथ कुछ समय के लिए दुआ

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 8 July 2021 Issue No.27

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

करनी चाहिए।

जलसे के दूसरे दिन हुज़ूर अनवर के तब्लीग़ी मेहमानों के साथ होने वाली मीटिंग के बाद कहने लगे कि मुझे क़ुरआन से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की केवल एक दलील दे दें। हमारे मुबल्लिग़ ने उन्हें आयत-ए-करीमा وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ और आयत-ए-करीमा اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ك का वर्णन करके हुज़ूर अलैहिस्सलाम की कुछ पेशगोइयों और जमाअत की तरक़्क़ी के बारे में बात की तो कहने लगे कि मैं बैअत करना चाहता हूँ क्योंकि अल्लाह तआला ने मुझे निशान दिखा दिया है। जब उनसे पूछा गया कि वह क्या निशान है? तो उन्हों ने बताया कि कल रात मैंने अल्लाह तआला से बड़े दर्द और रौ-रौ कर सजदे में दुआ की और रात को जब सोया तो ख़्वाब में देखा कि एक बड़ी सी दीवार पर चमकते शब्दों में अहमदिया लिखा हुआ है। और उस में से ग़ैरमामूली नूर फूट रहा है। फिर जब मैं जलसा गाह में हाज़िर हुआ और हुज़ूर अनवर का जर्मन मेहमानों से भाषण सुना तो इसी बीच मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि काश मुझे हुज़ूर अनवर के साथ और आपके क़ुरब में खड़े होने का अवसर मिल जाए। कुछ देर के बाद ऐसे महसूस हुआ जैसे एक लम्हे के लिए मुझ पर ग़नूदगी सी तारी (तन्द्रा आवस्था) हुई और मैंने देखा कि मैं स्टेज पर हुज़ूर अनवर के साथ खड़ा हूँ।

वह कहते हैं : इस के बाद हक़ मेरे दिल में प्रकट हो गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की क़ुरआन-ए-करीम से एक दलील महिज़ और संतावना के लिए मांगी थी अन्यथा वास्तविकता यह है कि दुआ के बाद स्वप्न से ही मेरी तसल्ली हो गई थी। इस लिए जलसा के तीसरे दिन इजतेमाई बेअत में यह भी थे।

एक इराक़ी अरबी मित्र जो इस जलसे में शामिल थे उन्होंने वर्णन किया : मैं विभिन्न धार्मिक उलेमा और मौलवी हज़रात की अत्यधिक रूढ़िवादी सोच से तंग आकर लोगों को सैकूलर इज़्म की ओर बुलाने लग गया था। परन्तु जब मेरा परिचय जमाअत अहमदिया से हुआ तो इस्लाम का सही चेहरा देख कर आशा की किरण पैदा हुई मैं समझता हूँ कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन ही ऐसा नूर हैं जिससे इस समय छाई हुई रात की ज़ुल्मत को ख़त्म किया जा सकता है। इस्लामी शिक्षाओं का जो विवेक और अनुकरण करने की तस्वीर आप दिखाते हैं उसे अरब देशों में उमूमन और इराक़ में विशेषता फैलना चाहिए। इसका कारण यह है कि लोग चरमपंथी और कट्टरवादी कर्यों से तंग आ गए हैं और उन्हें इसका अच्छा पर्यावाची नहीं मिल रहा इस लिए वह इस्लाम को छोड़ रहे हैं।

इसी तरह एक और अरबी मित्र ने कहा : इस जलसे में इस्लामी शिक्षाओं के हवाला से "मुहब्बत सब के लिए" का जो संदेश हमें मिला है उसे यूरोप में मज़ीद फैलाना चाहिए क्योंकि यहां इस्लाम के बारे में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ पाई जाती हैं।

स्पेन से आए हुए एक अरब मित्र इदरीस साहिब को भी इस जलसा में बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली है। वह वर्णन करते हैं कि: मैं जलसे के निज़ाम और नज़म वज़बत और इतने बड़े इज्तेमा को देखकर हैरान रह गया। इतना बड़ी भीड़ एक ख़लीफ़ा के पीछे एक लड़ी की तरह पिरोइ हुई थी। यह दृश्य इमान बढ़ाने वाला था। उन्हों ने कहा : मेरी ख़ुशी की सीमा नहीं है और मेरी इच्छा है कि मैं प्रत्येक जलसे में शरीक हूँ क्योंकि दिल की और अध्यात्मिक तौर पर मेरा इस जलसे से एक सम्बन्ध स्थापित हो गया है।

स्पेन से ही आए हुए एक अरब मित्र मुहम्मद अरबी साहिब को भी इसी जलसा में बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली है। उन्होंने वर्णन किया कि : मुझे इस महान जलसे में विभिन्न देशों से आए हुए अहमदियों के साथ शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई है। मैं आपके हुस्न ज़याफ़त और हुस्न अख़लाक़ की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। मैंने बहुत सी इस्लामी जमाअतें देखें हैं परन्तु किसी जमाअत में यह उदाहरण नहीं पाया कि वह एक हाथ पर इस तरह मुत्तहिद हों जिस तरह जमाअत अहमदिया के लोग हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

क़ौमी भाषा है और उर्दू में इस लिए कि आपके पहले सम्बोधित उर्दू जानने वाले थे। और यदि देखा जाए तो आपके इल्हामात का उसूली हिस्सा सब का सब या अरबी में है या उर्दू में। दूसरी भाषाओँ में जो इल्हाम हुए हैं वे ऐसे नहीं कि उनके बग़ैर तब्लीग़ में रोक पैदा हो। वे केवल एक और सहायता और निशान के तौर पर हैं।

ईसाइयों ने और विशेषता वेरी ने इस आयत से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात पर आरोप लगाया है। वेरी साहिब कहते हैं कि इस आयत से मालूम होता है मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अरब के लिए थे। परन्तु साथ यह भी लिखते हैं कि इस आयत से साबित होता है कि क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद करना जायज़ है। उनकी ये दोनों बातें आपस में विपरीत हैं। यदि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल अरब के लिए थे तो अनुवाद का प्रश्न ही कहाँ रहा। जब दूसरी क़ौमों का इससे सम्बन्ध ही नहीं तो अनुवाद करने की ज़रूरत ही नहीं और यदि इस आयत से अनुवाद करना जायज़ साबित होता है तो मालूम हुआ कि आपकी रिसालत दूसरी क़ौमों के लिए भी थी। हक़ीक़ी उत्तर इस प्रश्न का यह है कि यह अर्थ इस आयत का हो ही नहीं सकता कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अरब के लिए हैं क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम के दूसरे स्थानों से स्पष्ट साबित है कि आप सब दुनिया की लिए आए थे।

इस आयत से यह भी मालूम होता है कि اُمُّ الْاَلْسِنَه है क्योंकि जो रसूल अरब में आया उसी के सपुर्द सब दुनिया की इस्लाह की गई। अत: अरबी में नाज़िल होने वाली वह्यी को सब दुनिया के लिए हिदायत क़रार देने से यह बात साबित होता है कि अरबी किसी न किसी रंग में सारी भाषाओँ की माँ है और दूसरी भाषाएँ उसकी बेटियों की तरह हैं।

इस आयत में आर्यों के इस आरोप का भी खंडन हो जाता है जो वे इस प्रकार करते हैं कि कलाम इलाही ऐसी भाषा में आना चाहीए जिसे कोई बोलता न हो ताकि सब में बराबरी रहे परन्तु क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि ऐसी भाषा में वह्यी होनी चाहीए जिसको लोग बोलते हों ताकि नबी उनको समझा सके और वे समझ सकें। जिस भाषा को दुनिया न बोल सकती है न समझ सकती है उसमें कलाम इलाही आने का फ़ायदा क्या हुआ। आर्यों की यह आस्था इस तरह भी ग़लत है कि जब वेद नाज़िल हुए यदि उसी समय ऋषियों ने उसे नहीं समझा तो उनका नुज़ूल बेफ़ायदा हो जाता है और यदि उनको वेद समझा दिया गया था तो फिर बराबरी न रही और यदि उस समय लोग मौजूद थे और उन्हें भी समझा दिया गया था तो मानों उस समय के लोगों के लिए बराबरी हो गई परन्तु जो लोग बाद में पैदा हुए उनके लिए बराबरी कहाँ रही। अब तो पण्डित तक वेदों की भाषा से नावाक़िफ़ हो रहे हैं।

चूँकि इस ज़माना के मामूर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर अरबी के बाद उर्दू में इल्हाम ज़्यादा अधिकता से हुआ है। मैं समझता हूँ कि इस आयत को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य की भाषा हिंदुस्तान की उर्दू होगी और दूसरी कोई भाषा इसके समक्ष नहीं ठहर सकेगी। ⊙ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ लेन के बाद يُضِلُّ اللّٰهُ लाने में अल्लाह तआला ने यह संकेत फ़रमाया है कि यदि समझने के सारे सामान न हों तो अल्लाह तआला गुमराह क़रार नहीं देता। आरोप हमेशा उसी समय क़ायम किया जाता है जबकि पहले समझाया जा चुका हो। मानों स्पष्टीकरण के बाद ही गुमराही का फ़तवा लगाया जा सकता है। इससे मालूम हुआ कि जिस क़ौम को किसी बात का पूर्ण ज्ञान न पहुंचे उस समय तक उनको न मानने की वजह से सज़ा नहीं दी जा सकती। इस विषय में ही मैं वह आरोप भी दूर करना चाहता हूँ जो ग़ैर मुबाइन की तरफ़ से हम पर लगाया जाता है कि मानों हम हर व्यक्ति को दंड के योग्य समझते हैं चाहे उसको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा पहुंचा हो या नहीं। यह आरोप ग़लत है। हम यह विचार कैसे रख सकते हैं जब कि क़ुरआन शरीफ़ में साफ़ तौर पर ज़ाहिर किया गया है कि तबाही का फ़तवा उसी समय लगता है जबकि स्पष्टीकरण हो चुका हो।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ वह ग़ालिब है। सज़ा दे सकता है लेकिन हकीम है। इस लिए जब तक सज़ा के कारण न हों उस समय तक सज़ा नहीं देता।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 442 से 444 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad